मई-२०२१ ◆ वर्ष १० ◆ अंक ०१ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मई-२०२१

विदुषी माँ बच्चे की खातिर,
होती पूर्ण उजास।
तोड़ अविद्या के सब बन्धन,
करती ज्ञान-प्रकाश।
यही लिखा है ऋषि ने बन्धु,
पढ़ देखो सत्यार्थ प्रकाश।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ११५

आपका प्यार, आपका विश्वास
एमडीएच ने रचा इतिहास
1919·CELEBRATING·2019
1919· शताब्दी उत्सव ·2019
100
Years of affinity till infinity
आत्मीयता अनन्त तक
MDH
मसालों में 100 साल की शुद्धता के जश्न
पर सभी ग्राहकों, वितरकों एवं शुभचिन्तकों को हार्दिक बधाई
महाशय धर्मपाल जी
पद्मभूषण से सम्मानित
विश्व प्रसिद्ध एमडीएच मसाले शुद्धता और गुणवत्ता की कसौटी पर खरे
भारत सरकार द्वारा "ITID Quality Excellence Award" से सम्मानित किया गया।
यूरोप में मसालों की शुद्धता के लिए "Arch of Europe" प्रदान किया गया।
"Reader Digest Most Trusted Brand Platinum Award" भी प्रदान किया गया।
The Brand Trust Report ने वर्ष 2013 से 2019 तक लगातार
5 वर्षों के लिए ब्रांड एमडीएच को India's Most Trusted Masala Brand
& India's Most Attractive Brand का स्थान दिया है।
MDH मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच
KASHMIRI MIRCH
Jal Jeera masala
Shahi Paneer
Sabzi masala
Sambhar masala
Chana masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Kitchen King
महाशय जी ने बड़े पैमाने पर समाज और मानव जाति की सेवा के लिये व्यवसाय को समर्पित किया है। एक सर्वश्रेष्ठ उद्योगपति होने के साथ साथ वह न केवल एक परोपकारी व्यक्ति हैं बल्कि समाज के कमजोर वर्ग के लिये ताकत और समर्थन का एक स्तम्भ भी हैं। एमडीएच एक कंपनी ही नहीं वह एक संस्था है एक विशाल परिवार है जोकि अपने सहयोग से 70 से अधिक सामाजिक संस्थाएं जैसे स्कूल, अस्पताल, गौशालाएँ, वृद्धाश्रम, अनाथालय, गरीब छात्रों, विधवाओं एवं गरीब परिवारों एवं आर्य समाज इत्यादि कई सामाजिक संगठनों की आर्थिक रूप से महाशय धर्मपाल चैरिटेबल ट्रस्ट और महाशय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से मदद करते हैं।
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com
ESTD. 1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

कार्यालय मंत्री

भँवर लाल गर्ग (मो. 7976271159)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - 11000 रु.	$ 1000
आजीवन -1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय - 400 रु.	$ 100
वार्षिक - 100 रु.	$ 25
एक प्रति - 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२१
चैत्र कृष्ण एकादशी
विक्रम संवत्
२०७८
दयानन्दाब्द
१९७

May - 2021

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं।सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २८

हलचल २९

०४ वेद सुधा
०८ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०४/२१
१४ जीवन की सार्थकता मन ......
१७ वेदों में 'हिन्दू और हिन्दुस्तान'...
१९ गलत बीज बीजने बंद करने होंगे
२१ हिन्दी के लिए लड़ाई
२६ राजा भोज की आँखे खोलने वाली
२७ स्वस्थ रहने के लिए लें १० संकल्प
३० सत्यार्थ पीयूष- ईश्वरोपासना

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १० अंक - ०१

द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर मुद्रण

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

मरों की चिन्ता मत कर

मा गतानामा दीधीथा ये नयन्ति परावतम्।
आ रोह तमसो ज्योतिरेह्या ते हस्तौ रभामहे।।

- अथर्ववेद ८/१/८

गतानाम्- (उन) गये हुओं की, मरे हुओं की, **तमसः-** अन्धकार को छोड़कर, **ज्योतिः आ+रोह-** प्रकाश पर आरुढ़ हो। **मा आ दीधाथाः-** मत चिन्ता कर, **एहि ते हस्ती-** आ, तेरे हाथों को, **ये परावतम् नयन्ति-** जो दूर ले-जाते हैं। **आरभामहे-** हम वेगयुक्त करते हैं।

व्याख्या- जीवन और मरण का चक्र दिन-रात चल रहा है। जीवन-मरण एक-दूसरे के अनुबन्धी हैं। संसार में यदि मरण न

हो, तो जीवन में कोई रस ही न रहे। विविधता ही जीवन है। मृत्यु में एक रसता है। उसमें किसी प्रकार का विकार, परिणाम, परिवर्तन नहीं होता है। जीवन तो है ही विकार का नाम। प्राणी उत्पन्न होता है। तब सत्ता बनती है। अवस्थाओं में अन्तर आता है, बढ़ता है, घटता है। उत्पत्ति से पूर्व की कथा कौन कहे? किन्तु उत्पत्ति के पश्चात् सत्ता, घटना-बढ़ना सभी है। विनाश से पूर्व की कहानी सुनाई जा सकती है, बाद की कथा कौन कह सकता है? होने, घटने, बढ़ने, बदलने का नाम ही जीवन है।

उत्पन्न हुआ शिशु असमर्थ है। हाथ-पांव मारता है, कर कुछ नहीं सकता। रोकर ही भूख-प्यास की बात बताता है। लो, जरा बड़ा हो गया, बोल रहा हैं, लड़-झगड़ रहा है। लो, अब तो दौड़ लगा रहा है। हृष्ट-पुष्ट है, चार हाथ का जवान है। अरे! यह क्या हुआ, झुरियाँ पड़ गई। बाल काले न रहे। दांत मुखकन्दरा से भाग रहे हैं। यह सब जीवन है। क्रियाशील जीवन का चिह्न है। जब तक जीता है, भली-बुरी क्रिया निरन्तर करता है।

सोया मनुष्य भी तो कुछ नहीं करता। केवल सांस लेता है। मृतक तो सांस नहीं लेता, किसी प्रकार की चेष्टा नहीं करता। जीवित और मृतक् के इस भेद के कारण वेद उपदेश करता है-

मा गतानामा दीधीथाः। मरों की चिन्ता मत कर।

मरों की चिन्ता से कोई लाभ नहीं। वे मर गये, अब न वे हमारा उपकार या अपकार कर सकते हैं और न हम ही उनका कुछ संवार या बिगाड़ सकते हैं। फिर उनकी चिन्ता से लाभ?

महाभारत में आता है-

गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।
पण्डितजन, ज्ञानी लोग मरों की चिन्ता नहीं करते।
क्यों? वेद कहता है-
वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तꣳशरीरम्। - यजुर्वेद ४०/१५

जीवन क्या है, शरीर और आत्मा का मेल। शरीर के साथ आत्मा का सम्बन्ध होने पर जीवन का चिह्न-प्राण भी शरीर में डेरा आ लगाता है। आत्मा ने शरीर छोड़ दिया, आत्मा से शरीर छुड़ा दिया गया, तो प्राण भी चल दिया, उसकी आत्मा ही से प्रीति थी। प्रियतम नहीं रहा, वह रहकर क्या करे? उसके बिना यह कर भी कुछ नहीं सकता। आत्मा और प्राण चले गये अब शरीर आह! यह सुन्दर लावण्यमय शरीर! आकर्षणसाधन शरीर! मिट्टी होकर रह गया।

जीवन-लीला समाप्त हुई। प्यार करे तो किससे? आत्मा के रहते इस शरीर को सजाते हैं। आत्मा चला गया, कहाँ गया, कुछ पता नहीं। खोज-खबर लगाने का कोई ढंग नहीं। उसका प्यार आत्मा से है, वह आत्मन्वी (आत्मवान्) प्राणी की ओर झुकता है। निष्प्राण को, अनात्मपदार्थ को छोड़ देता है।

मृतक का चिन्तन जीवन से दूर ले-जाता है। जीवन प्रकाश है, मरण अन्धकार है, अतः वेद का उपदेश है-
आ रोह तमसो ज्योतिः।
अन्धकार को छोड़कर प्रकाश पर आरूढ़ हो।

वेद प्रकाश का उपदेशक है। वेद का अर्थ है ज्ञान, ज्ञानसाधन, ज्ञान का अधिकार आदि आदि। ज्ञान प्रकाश है। वेद स्थान-स्थान पर प्रकाश की प्राप्ति पर बल देता है। वेद के व्याख्याकार, ब्राह्मणग्रन्थकर्त्ता ऋषि भी कहते हैं-

तमसो मा ज्योतिर्गमय (श.) मुझे अन्धकार से हटाकर प्रकाश की प्राप्ति करा। सारा वैदिक साहित्य प्रकाश प्रचारक है। होना भी चाहिए, क्योंकि अन्धकार उल्लू या उस-जैसों को पसन्द आ सकता है। वेद तो 'उलूकयातुं जहि' उल्लू का स्वभाव छोड़ने का उपदेश करता है। वेद में मनुष्य बनने का प्रथम साधन 'भानुमन्विहि' प्रकाश का अनुसरण बताया गया है। मरों का क्या अनुसरण? गुरु जीता ही अच्छा। जीता गुरु ही शिष्य को संवार सुधार सकता है। जीवन ज्योति है और ज्योति जीवन है, अतः वेद कहता है-
आ रोह तमसो ज्योतिः।
ज्योति-प्राप्ति के लिए, जीवन लाभ के लिए, मनुष्य को पुरुषार्थ करना चाहिए, उद्योग करना चाहिए। अनुद्योगी, आलसी तो प्रकाश प्राप्त करके भी अन्धकार में रहता है, अतः वेद कहता है-
एहि, आ, गति कर, सब ओर चल।
क्या कहते हो? मेरे हाथों में बल नहीं, अतः चेष्टा नहीं की सकता। ज्ञानी गुरु कहते हैं-
एहि, आ ते हस्तौ रमामहे।
आ, आ, हम तेरे हाथों को वेगयुक्त करते हैं।

जो पुरुषार्थी है, उसके सभी सहायक हो जाते हैं। संसार की सब शक्तियाँ उसके अनुकूल हो जाती हैं, तू भी पुरुषार्थ कर। मरने वाले मर गये, उनकी ओर देखने से क्या बनेगा? उनका बार-बार विचार मौत का शिकार बनाएगा। वेद (अथर्व. ८/१/७) में कहा है- **मा जीवेभ्यः प्रमदः**- जीवितों से प्रमाद न कर। बार-बार मरों का विचार जीवितों से उपेक्षा उत्पन्न करता है और धीरे-धीरे अपने जीवन से भी उपेक्षा होने लगती है। यह प्रवृति घातक है। यह तो तम है, अतएव अभद्र है। नीतिकार कह गये हैं- **'जीवन्नरो भद्रशतानि पश्यति'**- जीता हुआ मनुष्य सैकड़ों भलाइयों का अनुभव करता है। इसी कारण वैदिक ऋषि दीर्घजीवन प्राप्ति के लिए यत्न किया करते थे। वे काल को ललकार सकते थे। भला, सोचो- मरों की चिन्ता जीवितों की उपेक्षा, यह कैसी विडम्बना है। मरों की चिन्ता छोड़कर जीतों का ध्यान कर, उनके जीने की सुख सुविधा का सामान कर।

- स्वामी वेदानन्द तीर्थ
(साभार- स्वाध्याय-सन्दीप)

सत्यसुधारक चाय की दुकान

आत्म निवेदन

'तुमने अपनी दुकान के ऊपर अपना नाम और जाति क्यों नहीं लिखी?'
'ऐसा लिखना आवश्यक तो नहीं, महाराज।'
'फिर तो तुमने आधे कोल्हापुर का धर्म भ्रष्ट कर दिया' और प्रश्नकर्त्ता खिलखिलाकर हँस पड़ा।
यह वार्तालाप राजर्षि शाहू जी महाराज और उन्हीं के मुलाजिम एक दलित गंगाराम काम्बली के मध्य हो रहा था। हलकी फुल्की बात करके गम्भीर सन्देश देना शाहू जी का स्वभाव था।

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में कोल्हापुर में गंगाराम काम्बले ने यह दुकान खोली थी और उसे यह दुकान खोलने के लिए अपेक्षित धन व प्रोत्साहन छत्रपति शिवाजी महाराज के वंशज राजर्षि शाहू जी महाराज ने दिए थे। 'सत्य सुधारक' नाम और यह चाय की दुकान कोई मामूली घटना नहीं थी बल्कि भारत के सामजिक ताने-बाने में हाशिये पर जा चुके दलितों की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित करने की एक प्रायोगिक और सार्थक पहल थी। यह पहल जब राजा करे तो इसका परिणाम और सकारात्मक निकलने की सम्भावना रहती ही है।

राजर्षि शाहू जी के प्रगतिशील विचारों पर प्रसिद्ध समाज सुधारक एवं दलितोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती की छाप स्पष्ट देखी जा सकती है। जिस समय में अछूत कहे जाने वाले बन्धुओं के साथ अमानवीय व्यवहार तथा छुआछूत की पराकाष्ठा थी उस समय आर्यसमाज के सैनिकों ने गाली-लाठी खाकर भी दलितों के साथ सहभोज कर अस्पृश्यता को प्रायोगिक चुनौती दी थी। १९वीं सदी के अन्त तक ऐसे सहभोजों की धूम मच गयी। जिनके पास गुजरने मात्र से तालाब का पानी अपवित्र हो जाता था, उनके साथ सवर्णों द्वारा खाना खाना, उनसे खाना बनवाना, उन्हें यज्ञोपवीत देना दलित-प्रतिष्ठा की पुनर्स्थापना की आर्यसमाज द्वारा की गयी अद्भुत कोशिश थी।

यही कोशिश शाहूजी महाराज द्वारा दलित गंगाराम को चाय की दुकान खुलवाकर और स्वयं वहाँ जाकर चाय पीकर की गयी। शाहू जी न सिर्फ स्वयं चाय पीते थे वरन् अपने सवर्ण कर्मचारियों को भी ऐसा करने को कहते थे। राजा को कौन मना करे?
गंगाराम काम्बले महाराज के राजमहल में काम करता था। एक बार जब शाहू जी बाहर गए थे तो संताराम नामक एक सवर्ण मराठा ने, उसके पानी का स्पर्श करने पर गंगाराम की जम कर पिटायी की। वापस आने पर जब महाराज को पता चला तो उन्होंने न सिर्फ संताराम की कोड़े से पिटायी की, उसे नौकरी से निकाल भी दिया। उन्होंने ही गंगाराम को चाय की दुकान खुलवायी। यह, दलितों के साथ इतिहास में जो अमानवीय व्यवहार किया गया व किया जा रहा था उसके प्रतिकार की छोटी सी प्रतीकात्मक कोशिश थी, जो दलितों के प्रति हृदय में अपार करुणा रखने वाले महाराज द्वारा की गयी।

उन्होंने सरकारी नौकरियों में दलितों के लिए आधी सीट आरक्षित भी कर दीं। अपनी मृत्यु से दो साल पहले १९२० में शाहू जी महाराज ने नागपुर में 'अखिल भारतीय बहिष्कृत परिषद्' की बैठक में न सिर्फ हिस्सा लिया, उन्होंने एक दलित से चाय बनवाकर पी, ऐसा उन्होंने कई मौकों पर किया। जाति और पन्थ कोई हो, सभी को प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था उनकी सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं में से एक थी। उन्होंने पिछड़ी जातियों के गरीब लेकिन मेधावी छात्रों के लिए कई छात्रवृत्तियाँ लागू कीं। परम्परागत ब्राह्मणों तक सीमित संस्कृत और शास्त्रों की शिक्षा के द्वार सभी जातियों के लिए खोलने हेतु उन्होंने वैदिक स्कूल

प्रारम्भ किये।

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के अतिरिक्त शाहू जी ज्योतिबा फुले से भी प्रभावित थे। उनके राज्य में जब ब्राह्मणों ने गैर ब्राह्मणों के धार्मिक संस्कार कराने से मना कर दिया तो उन्होंने एक युवा मराठा विद्वान् को धर्म प्रमुख के रूप में नियुक्त कर उसे 'क्षत्र जगद्गुरु' की पदवी प्रदान की।

जिस समय वेद का अध्ययन केवल ब्राह्मणों तक सीमित हो गया था, महर्षि दयानन्द महाराज ने यजुर्वेद के २६वें अध्याय दूसरे मन्त्र को वेदाध्ययन में सभी के अधिकार के प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत कर एक क्रान्ति का सूत्रपात कर दिया।

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्याᳬशूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु॥

महर्षि दयानन्द इसका भाष्य करते हुए लिखते हैं- इस मन्त्र में उपमालंकार है। परमात्मा सब मनुष्यों के प्रति इस उपदेश को करता है कि यह चारों वेदरूप कल्याणकारिणी वाणी सब मनुष्यों के हित के लिए मैंने उपदेश की है, इस में किसी को अनधिकार नहीं है, जैसे मैं पक्षपात को छोड़ के सब मनुष्यों में वर्तमान हुआ प्यारा हूँ, वैसे आप भी होओ। ऐसे करने से तुम्हारे सब काम सिद्ध होंगे।

इसी निर्देश की पालना जीवन पर्यन्त शाहू जी महाराज ने की। इस पर बहुत विवाद हुआ। जो वेदोकता विवाद के रूप में जाना गया। कुछ भी हुआ पर शाहू जी महाराज ने अपने कदम पीछे नहीं हटाये।

दलितों की दशा में बदलाव लाने के लिए उन्होंने बलूतदारी और वतनदारी नामक प्रथाओं का अन्त किया जो युगान्तरकारी साबित हुईं। १९१७ में उन्होंने उस 'बलूतदारी-प्रथा' का अन्त किया, जिसके तहत एक अछूत को थोड़ी सी जमीन देकर बदले में उससे और उसके परिवार वालों से पूरे गाँव के लिए मुफ्त सेवाएँ ली जाती थीं। इसी तरह १९१८ में उन्होंने कानून बनाकर राज्य की एक और पुरानी प्रथा 'वतनदारी' का अन्त किया तथा भूमि सुधार लागू कर महारों को भू-स्वामी बनने का हक दिलाया। इस आदेश से महारों की आर्थिक गुलामी काफी हद तक दूर हो गई।

देखा जाय तो राजर्षि छत्रपति शाहू जी ने आर्यसमाज के सभी कार्यों को अपने राज्य में लागू करने में विशेष तत्परता दिखायी। छत्रपति ने अपने साम्राज्य में महिलाओं की स्थितियों में सुधार की दिशा में भी काम किया। उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने के लिए स्कूलों की स्थापना की, और महिलाओं की शिक्षा की जबरदस्त वकालत की। उन्होंने १९१७ में विधवा पुनर्विवाहों को वैध बनाया और बाल-विवाह को रोकने के प्रयास किए। महर्षि दयानन्द जिस अनिवार्य शिक्षा की आवश्यकता को अनुभव करते थे उसे शाहू जी ने मूर्तरूप दिया और कोल्हापुर राज्य में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की।

वे जन्मगत जातिवाद के विरोधी थे। १५ अप्रैल, १९२० को नासिक में 'उदोजी विद्यार्थी' छात्रावास की नींव का पत्थर रखते हुए शाहू महाराज ने कहा था कि- 'जातिवाद का अन्त जरूरी है। जाति को समर्थन देना अपराध है। हमारे समाज की उन्नति में सबसे बड़ी बाधा जाति है। जाति आधारित संगठनों के निहित स्वार्थ होते हैं। निश्चित रूप से ऐसे संगठनों को अपनी शक्ति का उपयोग जातियों को मजबूत करने के बजाय इनके खात्मे में करना चाहिए।' इनका यह उद्बोधन आज भी प्रासंगिक है।

कुख्यात देवदासी प्रथा के बारे में सभी जानते हैं जिसका एकमात्र उद्देश्य बालिकाओं को धर्म की आड़ में प्रमुखों की हवस का साधन बनना था। कहने को तो उन मासूमों का विवाह देव प्रतिमा से किया जाता था परन्तु वह गाँव के प्रमुख लोगों की भोग्या होती थीं। शाहू जी ने इसे समाप्त करने हेतु कानून बनाने की शुरूआत की।

दलितों के सुप्रसिद्ध नेता डॉ. भीमराव अम्बेडकर को उन्होंने अर्थ सहयोग तथा समर्थन दिया क्योंकि वे दलितों के उत्थान के लिए समर्पित थे। बहुत कम ऐसे राजा हुए हैं जिन्होंने अपने राज्य में सुधारों की इतनी गहरीं नींव डाली हो। शाहू जी ने व्यापार के क्षेत्र में भी बिचौलियों की धूर्तता तथा चालाकी देख ली थी अतः इनको समाप्त करने के लिए सहकारी संगठनों की नींव डाली।

शाहू जी का जन्म कोल्हापुर जिले के कागल गाँव के घाटगे रॉयल मराठा परिवार में २६ जून, १८७४ में जयश्रीराव और राधाबाई के घर में यशवन्तराव घाटगे के रूप में हुआ था। १० साल की उम्र तक उनकी शिक्षा उनके पिता की देख-रेख में सम्पन्न हुयी। ब्रिटिश षड्यंत्र और अपने ब्राह्मण दीवान की गद्दारी की वजह से जब कोल्हापुर की रियासत के राजा शिवाजी (चतुर्थ) का कत्ल हुआ तो यशवन्त राव को राजा की विधवा रानी आनन्दीबाई ने गोद लिया था। उन्होंने राजकुमार कॉलेज, राजकोट में अपनी औपचारिक शिक्षा पूरी की। १८९४ में वे सिंहासन पर बैठे। सिंहासनारूढ़ होने पर यशवन्तराव का नाम छत्रपति शाहूजी महाराज रखा गया था। अप्रैल १९१९ को कानपुर में आयोजित अखिल भारतीय कुर्मी महासभा के १३वें राष्ट्रीय सम्मलेन में उन्हें राजर्षि के खिताब से सम्मानित किया गया। शाहू जी को पहलवानी का बड़ा शौक था। एक तेंदुए को पलभर में ही खाली हाथ मार गिराने वाले शाहू जी असाधारण रूप से मजबूत थे। उन्हें रोजाना दो पहलवानों से लड़े बिना चैन नहीं आता था।

६ मई १९२२ को ४८ वर्ष की कम उम्र में ही उनका निधन हो गया। अन्यथा इस दयालु शासक के काल में और भी सुधारों के दिग्दर्शन हो सकते थे। इतिहास राजर्षि का दलितों के हितैषी के रूप में मूल्यांकन करेगा ही परन्तु सच यह भी है कि वे समभाव के उत्तम आदर्श थे। उनकी पुण्यस्मृति में यह लेख पाठकों को समर्पित है। उनका व्यक्तित्व व कृतित्व सदैव प्रेरणा देता रहेगा। उनके महान् व्यक्तित्व के दर्शन उनके निम्न कथन में होते हैं 'कल न मैं होऊँगा, न आप होंगे, न राजा होंगे, न रजवाड़े होंगे। मगर यह राष्ट्र हमेशा रहेगा और हमें इसको आगे बढ़ाने का काम करते रहना है। समाज में सबको सम्मान मिले, सभी शिक्षित होकर राष्ट्र के उत्थान मे भागीदार बनें। तभी हमारा जीवन सफल माना जायेगा।'

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

पूरा नाम–
चलभाष–

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०४/२१

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या–

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (नवम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ मु	१	■	२	२	न् २	■	३	यो ३	३
■	वि ४	४	४	स्व ४	४	■	५	व ५	५
६	डा ६	६	■	७ स	७		७ ण	८	न ८

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जैसे सांसारिक सुख शरीर के आधार से भोगता है, वैसे परमेश्वर के आधार से किस आनन्द को जीवात्मा भोगता है?
२. जो मनुष्य सात्त्विक हैं वे क्या कहाते हैं?
३. सब जीव स्वभाव से सुख प्राप्ति की इच्छा और दु:ख का क्या होना चाहते हैं?
४. जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है वह क्या कहाता है?
५. जो नर शरीर से चोरी, परस्त्रीगमन, श्रेष्ठों को मारने आदि दुष्ट कर्म करता है उसको किसका जन्म मिलता है?
६. मन से किये दुष्ट कर्मों से कौन सा शरीर मिलता है?
७. जो वेदों का अभ्यास, धर्मानुष्ठान, ज्ञान की वृद्धि, पवित्रता की इच्छा, इन्द्रियों का निग्रह, धर्मक्रिया और आत्मा का चिन्तन होता है ये सब किसके लक्षण हैं?
८. क्या अधिक होने से मुक्ति में जीवात्मा को अधिक आनन्द होता है?

''विस्तृत नियम पृष्ठ २२ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जुलाई २०२१

१३

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि-जन्मशताब्दी लेखमाला

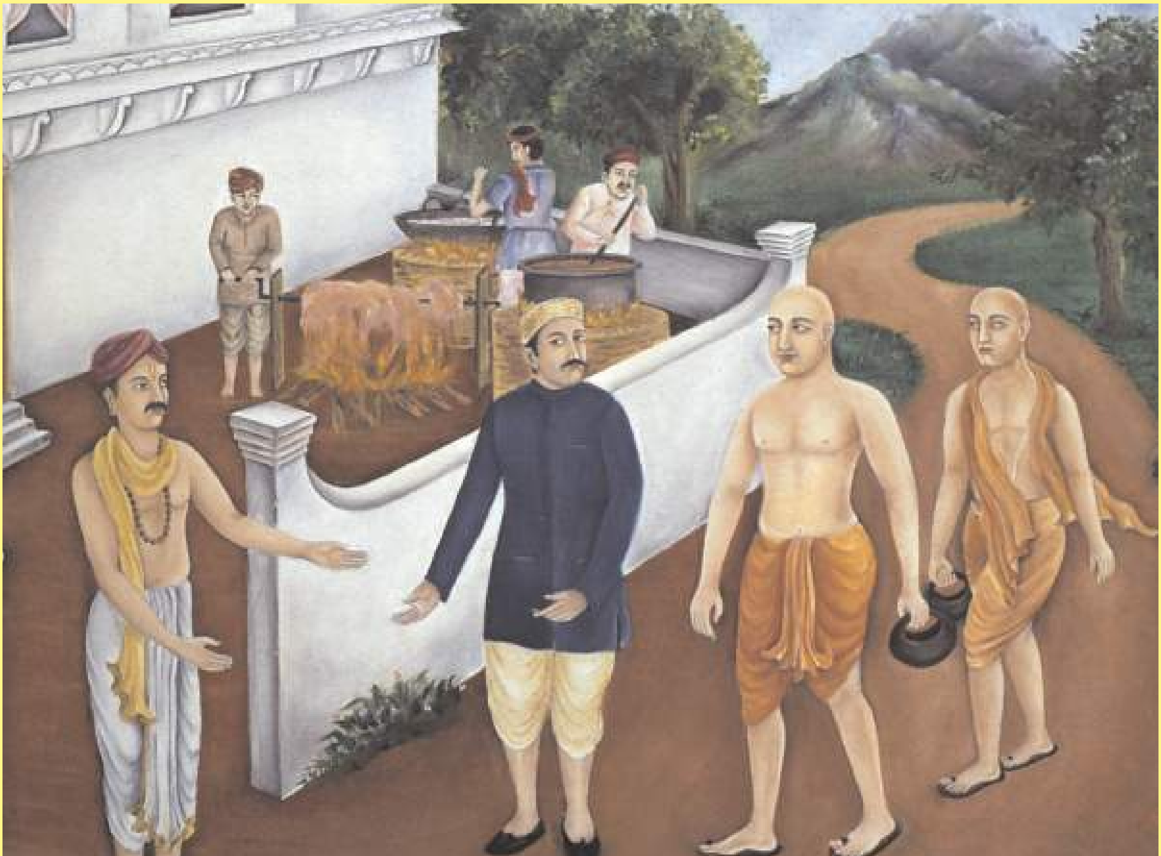

मांसाहार के प्रति घृणा का परिचय

महर्षि दयानन्द दया, स्नेह और करुणा की प्रतिमूर्ति थे। अपने स्वाद के लिए निरीह प्राणियों का वध कर देना उन्हें कदापि स्वीकार नहीं था। एक बार टिहरी में एक राजपंडित ने स्वामी जी को भोजन के लिए अपने यहाँ आमन्त्रित किया। जब स्वामी जी वहाँ पहुँचे तो एक पण्डित को मांस काटते व बनाते देख उन्हें अत्यन्त घृणा हुई और वे उल्टे पाँव वहाँ से लौट गए। जीव मात्र के प्रति अतुल स्नेह रखने वाले करुणासागर देव दयानन्द के लिए मांसाहार के प्रति विरक्ति दिखाना स्वाभाविक ही था।

सर्वश्रेष्ठ है स्वयंवर विवाह

अब तक हमने उन बिन्दुओं की चर्चा की जो नारी के सम्मान में अवरोधक के रूप में खड़े रहते हैं परन्तु अब आगे हम उन बिन्दुओं की चर्चा करना चाहेंगे जिनका आश्रय लेकर नारी का सम्मान स्थापित किया जा सकता है। वैवाहिक जीवन में, गृहस्थ आश्रम में, वैदिक संस्कृति में, नारी को केन्द्र बिन्दु माना गया है पर इसके लिए आवश्यक है कि ऋषियों की पद्धति के अन्तर्गत जो निर्देश दिए गए हैं उनका परिपालन किया जाए। यह निर्देश ऋषियों ने वेद मंत्रों के आधार पर दिए हैं और इस लेख में हम यह दर्शाने का प्रयास करेंगे।

उदाहरण के तौर पर वेद कहता है कि वर वधू के गुण-कर्म-स्वभाव समान होने चाहिए। अगर हम अपने चारों ओर निगाह दौड़ायें तो पायेंगे कि वर-वधू के समान गुण-कर्म-स्वभाव विवाह की सफलता को सुनिश्चित करने में साधक होते हैं। तुल्य गुण-कर्म-स्वभाव वर-वधु के अन्दर जब होते हैं तो वह सामंजस्य पैदा करते हैं और गृहस्थ की मुश्किलों से साथ-साथ निपटने की क्षमता प्रदान करते हैं। एक दूसरे से व्यवहार के समय दूसरे की योग्यता तथा समान शारीरिक तथा मानसिक क्षमता शारीरिक, सामजिक आत्मिक तथा काम सम्बन्धी, सभी स्तरों पर अद्भुत सहजता स्थापित करते हैं। लोक में हम ऐसे अनेक उदाहरण देखते ही हैं जहाँ पति उच्च पदस्थ तथा उच्च शिक्षित होता है परन्तु उसका विवाह परम्परागत रूप में जिससे किया जाता है वह कन्या उतनी शिक्षित तथा उस परिवेश की नहीं होती है। इनका दाम्पत्य सहज नहीं होता है। पति का जो सामजिक परिवेश होता है उसमें पत्नी निभ नहीं पाती है फलतः कटुता उत्पन्न होती जाती है और अनेक बार पति उसे त्याग अथवा उसे पैतृक निवास पर छोड़ दूसरा विवाह कर लेता है, अथवा भारतीय परम्परा के आदर से नहीं भी त्यागता तो उनका दाम्पत्य विरोधों से भरा और कष्टप्रद होता है। ऐसे गृहस्थ में सन्तान को विकास के लिए सन्तुलित वातावरण नहीं मिल पाता। वैचारिक समानता, खान-पान और आचार-व्यवहार की समानता भी गुण-कर्म-स्वभाव के अन्तर्गत आती है और ये अत्यन्त मत्वपूर्ण हैं। तीव्र आकर्षण के वशीभूत होकर युवा जोड़े जब इन पर ध्यान नहीं देते तब अधिकांश मामलों में यह देखने में आया है कि कुछ समय बाद ही संस्कारों की भिन्नता उनमें मतभेद उत्पन्न कर देते हैं। अभी हाल में एक चर्चित विवाह हुआ था। आई.ए.एस. टॉपर टीना डाबी का, द्वितीय स्थान पर आये अजहर आमिर के साथ। विवाह को दो वर्ष ही बीते हैं कि टीना ने अदालत में तलाक का आवेदन कर दिया है।

ऐसे अनेक उदाहरण मिल जाते हैं कि बाल्यकाल में और माता-पिता या रिश्तेदारों के दबाब में विवाह कर दिया गया। विवाह के पश्चात् पत्नी को तो शिक्षा का अवसर नहीं मिला परन्तु पति उच्च शिक्षा प्राप्त कर उच्च अधिकारी बन गया। वह अपनी पत्नी को अपने साथ शहर इसलिए नहीं ले गया क्योंकि वह उसके शब्दों में गंवार

थी। उसे उसने गाँव में ही रहने दिया और शहर में नए सम्बन्ध बना लिए। ये कैसा दाम्पत्य था सभी अंदाजा लगा सकते हैं। वैदिक संस्कृति में इन बिन्दुओं पर भली भाँति चिंतन कर लिया गया है। परमेश्वर ने वेदज्ञान स्वरूप जो निर्देश दिए हैं उन्हें ही आदर्श माना है। गृहस्थ सुखी है तो समाज स्वस्थ हो सकेगा गृहस्थ असंतुलित है तो सब कुछ बर्बाद हो जाएगा यह सोच रखने वाले ऋषियों ने गृहस्थाश्रम को सर्वोच्च वरीयता देते हुए इसमें शुचिता, समता, माधुर्य और प्रेम की गंगा बहे, इस हेतु निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देने का आग्रह किया है।

✶ दोंनों शिक्षित हों।

✶ दोनों पूर्ण युवावस्था प्राप्त हों।

✶ विवाह से पूर्व दोनों अखण्ड ब्रह्मचारी हों।

✶ दोनों प्रसन्नता से एक दूसरे को भलीभाँति जानकर प्रसन्नतापूर्वक विवाह करना चाहें। विद्या-रूप-बल-स्वभाव में दोनों समान हों, अर्थात् स्वयंवर विवाह हो। (आजकल के प्रेमविवाह इससे भिन्न हैं।)

✶ एकपत्नी तथा एकपति व्रती हों।

✶ जरावस्था तक धर्म सम्पादनार्थ एक दूसरे के साथ चलने की तीव्र इच्छा तथा व्रत से अनुप्राणित हों।

✶ परिवार और संतान निर्माण के गूढ़तम महत्त्व को समझते हों तथा इस निमित्त सामंजस्य भाव का अनुकरण करते हुए अपने अहम् का त्याग करने को तत्पर रहें।

अगर उक्त निर्देशों को धारण किया जाए तब कोई कारण नहीं कि दाम्पत्य जीवन सुखी न हो, सुसन्तानों का निर्माण न हो। निम्न वेदमंत्र इन सभी तत्वों की पुष्टि करता है।

गृहा मा बिभीत मा वेपध्वमूर्जं बिभ्रतऽएमसि।
ऊर्जं बिभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमानः॥

– यजुर्वेद ३/४१

मनुष्यों को पूर्ण रूप से ब्रह्मचर्य आश्रम का सेवन करके युवावस्था में स्वयंवर विधि से अपने समान स्वभाव विद्या रूप और बल वाली तथा अच्छी प्रकार परीक्षा की गई स्त्री से विवाह करके शरीर और आत्मा के बल को उत्पन्न कर और सन्तानों को जन्म देकर सब साधनों से उत्तम व्यवहारों में स्थिर रहना चाहिए।

वस्तुतः हम पहले दर्शा चुके हैं कि जब महर्षि दयानन्द का आविर्भाव इस धरा पर हुआ था तब गृहस्थ की गाड़ी के दो पहिये असमानता, परस्पर अस्वीकृति और चयन में परतंत्रता के साथ-साथ अपरिपक्वता के बोझ से असंतुलित होते थे अतः गृहस्थ जीवन अल्पजीवी और एक अंग के लिए प्रायः कष्टसाध्य होता था। महर्षि दयानन्द जब आश्रम व्यवस्था की बात करते हैं तो गृहस्थाश्रम को चारों आश्रमों में ज्येष्ठ मानते हैं अतः आवश्यक था कि इस आश्रम के सभी घटक सुखी व संपन्न हों तभी अन्य आश्रमों के मर्यादा में

रहने व उपयोगी होने की बात सम्भव थी।

अब प्रश्न यह था कि भारतवर्ष में गृहस्थाश्रम से जुड़ गयीं सभी कुरीतियाँ प्रारम्भ से अस्तित्व में थीं अथवा कालान्तर या समय विशेष में जुड़ गयीं। आचार्य दयानन्द का स्पष्ट सुचिन्तित मत था कि ये सब कुरीतियाँ कभी भी वैदिक संस्कृति का भाग नहीं रहीं। ये सभी अर्वाचीन हैं। दयानन्द ने अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए वेद का सहारा लिया। पाठक कह सकते हैं कि इसमें नयी बात क्या हुयी? आर्यावर्त्त में तो सदैव से वेद को सर्वोपरि प्रमाण माना ही जाता है। हमारा कहना है कि नयी बात दयानन्द द्वारा प्राचीन वेद-भाष्य पद्धति को अपनाना था जो दयानन्द के पूर्ववर्ती वेद-भाष्यकारों से छूट गयी थी। यही कारण है कि विदेशी भाष्यकारों की बात छोड़ भी दें तो वेद को ईश्वरीय मानने वाले सायण अपनी बात पर स्थिर न रह सके। वेदमंत्रों का ऐतिहासिक अर्थ करने से वे अपनी प्रतिज्ञा कि 'वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं, से दूर चले गए' तो दूसरी ओर उनके भाष्य वेदों में पशु हिंसा, अश्लीलता आदि अवैदिक तत्वों की उपस्थिति से रहित न रह सके। अब महीधरादि की तो बात क्या की जाय जिनके अर्थ अश्लीलता की सभी सीमाएँ लांघ गए हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि सायण, महीधर, उव्वट, रावण आदि से ऊपर दयानन्द का वेदभाष्य क्यों माना जाय? संस्कृत के विद्वान् तो वे भी थे। विद्वानों के कई समाधान हो सकते हैं, हमारी दृष्टि में ये तीन मुख्य हैं-

✶ आर्ष पद्धति का आश्रय लेना।

✶ स्वतन्त्र, निर्भीक, निष्पक्ष होने से किसी लौकिक सत्ता को प्रसन्न करने के दबाब से उनका पूर्णतः मुक्त होना।

✶ तीसरा शुद्धात्मा व शुद्ध अंतःकरण से समाधि अवस्था में

परमेश्वर से पूछकर भाष्य करने की सामर्थ्य व परमेश्वर की कृपा का पात्र होना।

परमेश्वर वेद मन्त्रों के अर्थ जनाता है इस हेतु हम महर्षि दयानन्द का प्रमाण भी प्रस्तुत कर दें तो लाभकारी रहेगा। वे सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखते हैं -'....और धर्मात्मा योगी महर्षि लोग जब-जब जिस-जिस के अर्थ को जानने की इच्छा करके, ध्यानावस्थित हो परमेश्वर के स्वरूप में समाधिस्थ हुए, तब-तब परमात्मा ने अभीष्ट मन्त्रों के अर्थ जनाये।' वर्त्तमान युग में महर्षि दयानन्द से पूर्व के भाष्यकार इस सामर्थ्य व दृष्टि से रहित थे। अतः ईश्वरीय निर्देशों का यथावत् प्रकटन केवल दयानन्द भाष्य में ही होता है। यही ऋषि की सबसे बड़ी विशेषता है। वैदिक निर्देशों की स्थापना का भी उनका प्रकार अद्भुत है। वे उनके समर्थन में तथा अर्वाचीन कुप्रथाओं के खण्डन में वेदमंत्रों का प्रमाण देते हैं, फिर भारतीय इतिहास के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं जहाँ इन कुरीतियों का, अपवाद को छोड़कर, अभाव ही मिलता है। इसके बाद वे प्राकृतिक न्याय के आधार पर सभी प्रकार की असमानताओं का विरोध कर सबको समान अवसर और जीवमात्र को सुनिश्चित न्याय की बात कह पाते हैं।

महिलाओं के सम्बन्ध में दयानन्द की देन पर हम गत अंकों में विस्तृत चर्चा कर चुके हैं। अब बात रह जाती है, जो नारी के लिए आवश्यक है कि जब वह गृहस्थ में प्रवेश करे तो कुछ बिन्दुओं का अवश्य ध्यान रखे और समाज के नेता तथा अभिभावक जन और गुरुजन इसमें न केवल उन्हें स्वतंत्रता दें बल्कि लक्ष्य-प्राप्ति में उनकी सहायता करें। शोक इस बात का है कि आज भी उक्त वेद मन्त्र में वर्णित बिन्दु वर-वधू के लिए सहज प्राप्य नहीं हैं। अतः दयानन्दीय पद्धति का अनुसरण करते हुए वेदमंत्रों के प्रमाण सहित अपनी बात कहेंगे।

अभि नो देवीरवसा महः शर्मणा नृपत्नीः।
अच्छिन्नपत्राः सचन्ताम्॥ - ऋग्वेद १/२२/११

महर्षि दयानन्द इस मन्त्र का भाष्य करते हुए लिखते हैं कि- जैसी विद्या, गुण, कर्म और स्वभाववाले पुरुष हों, उनकी स्त्री भी वैसे ही होनी ठीक हैं, क्योंकि जैसा तुल्य रूप विद्या, गुण, कर्म स्वभाववालों को सुख का सम्भव होता है, वैसा अन्य को कभी नहीं हो सकता। इससे स्त्री अपने समान पुरुष वा पुरुष अपने समान स्त्रियों के साथ आपस में प्रसन्न होकर स्वयंवर विधान से विवाह करके सब कर्मों को सिद्ध करें।

वस्तुतः महर्षि दयानन्द का स्पष्ट मत था कि विवाह सामान गुण-कर्म-स्वभाव वालों के मध्य ही होना चाहिए। वे सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में लिखते हैं-

'जब स्त्री पुरुष विवाह करना चाहैं तब विद्या, विनय, शील, रूप, आयु, बल, कुल, शरीर का परिमाणादि यथायोग्य होना चाहिये। जब तक इन का मेल नहीं होता तब तक विवाह में कुछ भी सुख नहीं होता और न बाल्यावस्था में विवाह करने से सुख होता।'

क्या विडम्बना है कि आज के माता-पिता गुण-कर्म-स्वभाव नहीं कुण्डली का मिलान कराना आवश्यक समझते हैं। इस कुण्डली ने न जाने कितनी रूपवती, गुणवान कन्याओं के भाग्य को ग्रसित कर रखा है। कितने अभिभावक दुःखसागर में गोते लगा रहे हैं उसका अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। अब तो मोबाइल में इस प्रकार के एप आ गए हैं जिनमें आप जन्म दिनांक और समय डालिए वे आपको बता देंगे कि इन युवक-युवती का विवाह होना सौभाग्यप्रद होगा या नहीं। क्षमा करें, हमारी दृष्टि में यह मूर्खता की पराकाष्ठा है। ऋषि इस सन्दर्भ में माता-पिता और अध्यापकों की भूमिका को उकेरित करते हुए लिखते हैं-

'जब दोनों के गुण-कर्म-स्वभाव सदृश हों तब जिस-जिस के साथ जिस-जिस का विवाह होना योग्य समझें उस-उस पुरुष और कन्या का प्रतिविम्ब और इतिहास कन्या और वर के हाथ में देवें और कहें कि इस में जो तुम्हारा अभिप्राय हो सो हम को विदित कर देना। जब उन दोनों का निश्चय परस्पर विवाह करने का हो जाय तब उन दोनों का समावर्त्तन एक ही समय में होवे। जो वे दोनों अध्यापकों के सामने विवाह करना चाहें तो वहाँ, नहीं तो कन्या के माता-पिता के घर में विवाह होना योग्य है। (सत्यार्थप्रकाश चतुर्थ समुल्लास) महर्षि दयानन्द यहाँ तक कहते हैं कि वर में कन्या से न्यून गुण तो कदापि नहीं होने चाहिए।

निम्न वेदमंत्रों के ऋषिकृत भाष्य में यही निर्देश प्राप्त होते हैं-

परस्याऽअधि संवतोऽवराँ२॥अभ्यातर।
यत्राहमस्मि ताँ२॥ऽअव॥ - यजुर्वेद ११/७१

कन्या को चाहिये कि अपने से अधिक बल और विद्या वाले वा बराबर के पति को स्वीकार करे, किन्तु छोटे वा न्यून विद्या वाले को नहीं।

इस वेदमंत्र में पुरुष के अधिक बल और विद्या की बात कही गयी है। यहाँ अनायास एक नारीवादी शोधकर्त्ता द्वारा किए गए एक शोध का स्मरण हो रहा है जिसमें सहस्रों महिलाओं

पर शोध कर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि आज के इस युग में भी नारी ऐसा पति चाहती हैं जो उनसे अधिक स्मार्ट हो, वेतन की बात हो तो उनसे कहीं अधिक वेतन वाला हो और शारीरिक सौष्ठव में उसका कोई मुकाबला न हो। सम्भवतः यह स्त्री मनोविज्ञान ही है जो उनकी तथाकथित नारीवादी भावनाओं को आहत करने वाला निष्कर्ष दे रहा है। परन्तु उक्त मन्त्र तो सबके निर्माता तथा सर्वज्ञ प्रभु का है जिन्होंने भी पुरुष में स्त्री से अधिक गुण होने को श्रेष्ठ अर्हता ही माना है।

पति-पत्नी के मध्य विशद् असमानताएँ गृहस्थ में क्लेश कारक होती हैं, यह क्लेश संतानों के सन्तुलित व उचित विकास में सर्वाधिक बाधक है। निम्न वेदमंत्र दृष्टव्य है-

माता देवानामदितेरनीकं यज्ञस्य केतुर्बृहती वि भाहि। प्रशस्तिकृद् ब्रह्मणे नो व्यु१च्छा नो जने जनय विश्ववारे।।

- ऋग्वेद १/११३/१९

ऋषि लिखते हैं कि इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। सत्पुरुष को योग्य है कि उत्तम विदुषी स्त्री के साथ विवाह करे जिससे अच्छे सन्तान हों और ऐश्वर्य नित्य बढ़ा करे क्योंकि स्त्रीसम्बन्ध से उत्पन्न हुए दुःखों के तुल्य इस संसार में कुछ भी बड़ा कष्ट नहीं है, उससे पुरुष सुलक्षणा स्त्री की परीक्षा करके पाणिग्रहण करे और स्त्री को भी योग्य है कि अतीव हृदय के प्रिय प्रशंसित रूप गुणवाले पुरुष ही का पाणिग्रहण करे।। क्रमशः .....

- अशोक आर्य

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ८००५८०८४८५

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री | डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

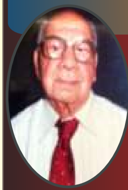

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

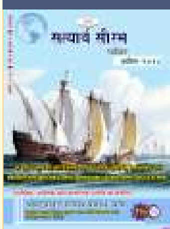

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

ये निर्विवाद सत्य है कि संसार में मनुष्य जीवन से श्रेष्ठ और कुछ नहीं। जीवन एक अविरल चलते रहने वाली यात्रा है। जीव अपने प्रियतम सखा प्रभु से मिलना चाहता है जिससे जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो सके। इस मुक्ति का सर्वोत्तम साधन मानव जीवन है। इस शरीर रूपी अद्भुत रथ का संचालक मन है। मन मनुष्यों के सब कामों की मानो कुँजी है। यदि वह नियंत्रण में आ जाये तो वह जीवन सफलता से सार्थक हो सकता है। इस लोक को भी सुखद बनाया जा सकता है और परलोक को भी सिद्ध किया जा सकता है।

महाभारत में कहा है- **'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो'** मन ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष का कारण है। आदि। पक्षी जैसा कोई उड़ नहीं सकता, मछली जैसा कोई तैर नहीं सकता, बन्दर जैसा कोई कूद नहीं सकता और मोर जैसा कोई नाच नहीं सकता। इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य शरीर से नहीं मन से जीता है।

मन यदि नियंत्रित है, वश में है तो इसकी अद्भुत क्षमता व शक्ति से मनुष्य आश्चर्यजनक कार्य कर सकता है। जीवन में मानसिक कर्म से ही सफलता प्राप्त होती है। मन की प्रसन्नता, शान्त भाव, भगवान का चिन्तन, मन को संयम में रखना, अन्तःकरण की पवित्रता ये सब मानस तप हैं। द्वन्द्वातीत रहना अर्थात् हर्ष, शोक, दुख-सुख, लाभ-हानि, राग-द्वेष, समृद्धि-निर्धनता, स्वस्थ-अस्वस्थ आदि स्थितियों में समान रहने से ही मन प्रसन्न होता है।

जगतगुरु शंकराचार्य के अनुसार जितं जगत् कौन? संसार को किसने जीता है? 'मनोहियेन' जिसने मन को जीत लिया। मन अत्यन्त चंचल है। प्रमथन स्वभाव वाला है। इसे नियंत्रित करना आसान नहीं। वायु को वश में करने जैसा दुष्कर है। इसकी चंचलता अग्नि की उष्णता, समुद्र को पी लेने, समुद्र को उरवाड़ देने, दहकते अंगारों को सटक लेने से भी कठिन है। मन की गति भी अत्यन्त तीव्र है। संसार में सूर्य की किरणें सर्वाधिक गति वाला यंत्र है किन्तु मन सूर्य से भी अधिक तेज गति वाला है। विज्ञान बताता है कि सूर्य की किरणें ७ सैकण्ड में पृथ्वी तक आ जाती हैं किन्तु मन तो एक सैकेण्ड में चौदह ग्रहों का चक्र लगा लेता है।

वास्तव में मनुष्य शरीर से नहीं मन से जीता है। यदि तुलना करें तो विदित होगा कि शरीर के विभिन्न अंगों में अन्य प्राणी बाजी मार लेते हैं जैसे नयनों में मृग, कण्ठ में कोयल मन और शरीर के बीच असन्तुलन ही मानव के दुःख का कारण होता है। धन साधनों की प्राप्ति आदि प्रचुर मात्रा में हो गई तो सिर एकदम अकड़ जाता है। यदि कमाई में से होकर गरीबी का चक्र आ गया तो हम निराशा और चिन्ता के भँवर में पड़ जाते हैं। तृष्णा-विजय से ही मन शान्त रह सकता है। तृष्णा की मात्रा ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है मन को प्रसन्न रखने के बदले उसे बैचेन कर देती हैं। उसे मन की प्रसन्नता अथवा चिन्ता से कोई मतलब नहीं।

मन को नियंत्रित करने के उपाय-

संसार की वास्तविकता का ज्ञान-यह दृश्यमान संसार नष्ट होने वाला है। इसकी सभी वस्तुऐं नष्ट होने वाली हैं। रूप सौंदर्य भी पर्दे से ढकी गन्दगी है। धन चमकीली मिट्टी है फिर भी वह किसी के पास सदैव नहीं ठहरता। यह वास्तविक ज्ञान होने पर मनुष्य की लक्ष्यहीन दौड़ धूप, उछल-कूद बन्द हो

जाती है। उसके मन का भटकना छूट जाता है। वह धर्म का आचरण करता है और नीतिपूर्वक शुद्ध आय उपार्जित करता है उसे विषय वासनाएँ नहीं सतातीं।

मन शीशे की भाँति पवित्र हो- मन में यदि वासनाओं, कुप्रवृत्तियों का कूड़ा-करकट भरा होगा तो उसमें कोई उपदेश ग्रहण न हो सकेगा। अतः उसे नियंत्रित करने के लिए उसका स्वच्छ होना आवश्यक है। एक सन्त किसी गृहस्थ से भिक्षा माँग रहे थे। गृह देवी ने भिक्षा देते समय निवेदन किया महाराज कुछ सदुपदेश भी करते जाने की कृपा करें। साधु ने कहा उपदेश कल करूँगा। महिला बोली- बहता पानी, रमता जोगी आप कल आये न आये क्या पता? सन्त ने आश्वस्त किया कि वह कल इसी समय अवश्य उपस्थित होंगे। दूसरे दिन महिला ने बड़े श्रम से खीर तैयार की और फिर साधुजी की प्रतीक्षा करती रही। साधु अपने वचनानुसार उपस्थित हुए। प्रसन्नवदना, गृह देवी ने अभिवादन सत्कार किया और उनसे खीर ग्रहण करने की प्रार्थना की। साधु ने कमण्डल आगे बढ़ा दिया। उसमें गोबर कूड़ा भरा था। देवी ने कहा महाराज! यह तो गन्दा है। साधु बोला इसी में डाल दें। देवी ने कहा इसमें तो मेरी खीर भी खराब हो जाएगी। लाओ अपना कमण्डल मैं साफ करके लाती हूँ। देवी ने कमण्डल साफ कर खीर भरकर साधु को दे दी। वह वापस चलने लगे। देवी ने कहा आपने उपदेश देने को कहा था वह तो करते जाइए। साधु ने कहा उपदेश कर तो दिया। महिला नहीं समझी तब सन्त ने कहा जैसे तुमने कमण्डल को साफ करने पर खीर डाली ऐसे ही मन को विषय वासनाओं से साफ करना होगा, यही उपदेश है।

मन शीशे की भाँति निर्मल होना चाहिए। एक राजा के यहाँ राज्य चित्रकार का पद रिक्त हुआ। उसके लिए विज्ञापन किया गया। केवल दो आवेदन पत्र प्राप्त हुए। दोनों ने अपने को सबसे श्रेष्ठ कलाकार होने का दावा किया। किसको चुना जाये समस्या थी। राजा ने कहा परीक्षा होगी जिसकी कला उत्तम होगी उसे चुन लिया जायेगा। दोनों तैयार हो गये। एक चित्र बनाने का निर्णय हुआ। पहले चित्रकार ने जिस दीवाल पर चित्र बनाया था उसे लिए आवश्यक सामान रंग, ब्रुश, तूलिका आदि प्राप्त कर लिया। दूसरे चित्रकार ने उस दीवाल के सामने की दीवाल पर चित्र बनाने को कहा। उसने कोई सामान नहीं माँगा। केवल एक परदा माँगा। दोनों चित्रकारों ने अगले दिन से चित्रकारी प्रारम्भ करना आरम्भ कर दिया। पहले चित्रकार अपने सामान के साथ आता दिनभर चित्र बनाता। दूसरा चित्रकार जिसके पास कोई सामान न था दीवाल पर परदा लगाकर उसे दिनभर घिसता रहता। तीन महीने में चित्र बनकर तैयार हुआ। राजा ने पहले चित्रकार का चित्र देखा वह इतना सुन्दर था कि उसे आश्चर्य हुआ। अब दूसरे चित्रकार के पास गया उसने परदा हटाया उसका चित्र दीवाल के अन्दर था वह पहले चित्रकार के चित्र से भी अधिक आकर्षक लग रहा था। वस्तुतः दूसरे चित्रकार ने

कोई चित्र नहीं बनाया उसने दीवाल को घिस घिसकर दर्पण की भाँति बना दिया जिससे जो चित्र पहले चित्रकार ने बनाया था वही चित्र दीवाल के अन्दर बना दिखाई पड़ रहा था। दीवाल के ऊपर से उसके अन्दर दीखने वाला चित्र अधिक आकर्षक प्रतीत होना स्वाभाविक है। इस प्रकार दूसरा चित्रकार ही राज्य चित्रकार के पद पर नियुक्त हुआ। अतः मन को दर्पण की भाँति निर्मल करना होगा। तभी वह नियन्त्रित हो सकेगा।

१. बुरे विचारों से दूर रहें- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् नेत्र तो खुलते हैं फिर भी सम्भव है कि वह किसी भी विषय के आने पर फिसल जाय। अतः बुरे संकल्पों से बचने से मन को बार-बार रोकने की आवश्यकता है। बुरा संकल्प आते ही उसे मन से बाहर करना होगा। अथर्ववेद का प्रेरणास्पद एक मन्त्र प्रस्तुत है-

परोपेहि मनस्पाप किमशस्तानी शंससि।
परेहि न त्वा कामये वृक्षां वनानि सं चर गृहेषु गोषु मे मनः।।

– अथर्ववेद ६/४५/१

अर्थात् हे मन के पाप दूर हो जा, भाग जा यहाँ से। यह क्या बुरी बात तू मुझे सिखाने आया है। जाओ मुझे तुम्हारी कामना नहीं है। वनों के वृक्षों से जाकर लिपटो। मैं तो अपने मन के घर की सफाई में संलग्न हूँ। इस प्रकार मन पर कड़ी दृष्टि रखनी होगी। निरन्तर बुरे विचारों को छोड़ने की प्रतिज्ञा करनी होगी। बुरा संकल्प मन में न आवे यदि आ भी जाये तो गायत्री मंत्र के जाप से उसे धोकर निकाल देना होगा। गायत्री मंत्र के जाप से बुद्धि चमक जायेगी। बुद्धि चमकने पर बुरा संकल्प हट जायेगा और मन नियंत्रण में आ जायेगा।

२. मन को नियंत्रण में लाने का एक सुगम साधन है इसे

खाली न रहने दिया जाये। जो निरन्तर कर्मशील रहते हैं उन्हें वासनाएँ नहीं सतातीं। खाली मन शैतान का घर होता है। मन एक नटखट घोड़ा है। इसे नियंत्रित करने के लिए इसे खाली न छोड़कर किसी काम में लगाये रखें। एक काम समाप्त हो जाये तो दूसरा काम उसके समाप्त होने के पूर्व ही निकाल कर रख लें। महात्मा गाँधी इस विषय में कहते थे जब तुम्हारे पास करने को कोई काम शेष न रहे तो अपने कपड़े फाड़ डालो और सुई धागा लेकर उन्हें सीना प्रारम्भ कर दो। सामान्यतया इसे हम मूर्खता समझेंगे किन्तु यह मन को खाली न रखने का एक उपाय है।

एक सेठ के यहाँ कोई नौकर स्थायी रूप से काम नहीं कर पाता था। यद्यपि यह सब सुविधायें देता था किन्तु उसके यहाँ काम इतने अधिक थे कि सब, कुछ दिन करने के बाद छोड़ जाते थे। एक बार मुफ्त का नौकर उसके यहाँ आया। उससे सेठ ने कहा बिना (पगार) मजदूरी के तुम काम कैसे करोगे? मैं आपसे कोई वेतन नहीं लूँगा किन्तु मेरी शर्त यह है कि यदि आप काम नहीं बताऐंगे तो मैं आपको खा जाऊँगा। सेठ ने सोचा मेरे पास इतने काम हैं कि ऐसा अवसर आने ही नहीं दूँगा। बस फिर क्या था उसने मुफ्त का नौकर रख लिया। नौकर इतना तेज था कि सेठ के बताने के पूर्व ही काम समझ लेता और तुरन्त पूरा कर देता। थोड़े दिन में उसने सब काम पूरे कर दिये। सेठ कोई काम बताने की स्थिति में न रहा तो जंगल में अपने गुरु के पास हाँफता हुआ पहुँचा। गुरु ने पूछा क्या बात है उसने बता दिया। गुरुजी मुफ्त का नौकर रखकर मुफ्त की बला मोल ले ली है। उसकी शर्त के अनुसार मेरे पास अब उसे देने को कोई काम नहीं है वह मुझे खाने को दौड़ेगा। गुरुजी ने कहा चिन्ता न कर। बाजार से एक लम्बा बाँस ले जाना अपने घर के बीच आँगन में उसे गाड़ देना। नौकर काम पूछने आवे कहना चढ़ो फिर उतरो, चढ़ो फिर उतरो सेठ जी ने यही किया। नौकर दो दिन में होश में आ गया और सेठजी के यहाँ से भाग गया। उनकी प्राण रक्षा हुई। इसलिए इस नटखट घोड़े को नियंत्रित करने का एक सरल सहज उपाय है इसे खाली मत रहने दो।

स्वामी दयानन्द सरस्वती से ब्रह्मचर्य के विषय में बंगाल के उस समय के नेता अश्विनी कुमार दत्त ने पूछा- महाराज! काम विकार मन में उत्पन्न हो और विचार शक्ति से मनुष्य उसे शान्त कर दे, यह तो समझ में आता है किन्तु मैं तो आपसे यह जानना चाहता हूँ कि कभी आपके मन में यह विकार उत्पन्न हुआ था या नहीं? इस प्रश्न को सुनकर कुछ समय के लिए स्वामी जी शान्त हो गये और आत्मनिरीक्षण करके उत्तर दिया- मुझे स्मरण नहीं आता कि मेरे मन में कभी विकार उत्पन्न भी हुआ हो। इसे सुनकर बंगाली नेता आश्चर्यचकित होकर फिर पूछने लगे- महाराज ऐसा कैसे सम्भव है? ऋषि ने उत्तर में कहा था- मेरे सामने इतने महान् कार्य हैं कि उनके चिन्तन से ही मन को अवकाश नहीं। अतः यदि मन को अन्यत्र कामों में निरन्तर लगाये रखकर खाली न रहने दें तो वह अवश्य ही नियंत्रण में आ जाता। क्रमशः ...

साभार- हितोपदेशक

श्री अरविन्द त्यागी को मातृशोक

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता, उदयपुर के सभी समाजों में अपनी सेवा प्रदान करने वाले, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अतीव सहयोगी एवं उदयपुर के प्रतिष्ठित वकील श्री अरविन्द त्यागी जी की पूज्य माता जी श्रीमती विमला त्यागी पत्नी स्वर्गीय देवराज सिंह त्यागी का निधन दिनांक २० अप्रैल २०२१ को हो गया।

न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार तथा उदयपुर के समस्त आर्यजन परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करे एवं परिवारीजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति एवं सामर्थ्य प्रदान करें।

– भवानीदास आर्य, मंत्री–न्यास

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला

वेदों में 'हिन्दू और हिन्दुस्तान' शब्द की कल्पना

राज्यसभा सांसद डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी ने 'हिन्दू और हिन्दुस्तान' शब्द की उत्पत्ति को लेकर दिनांक २५ मार्च, २०२१ को अपनी फेसबुक वाल पर एक पोस्ट शेयर किया जिसमें उन्होंने अपने साथी 'अरुन्धति वशिष्ठ अनुसन्धान पीठ' के निदेशक डॉ. चन्द्रप्रकाश को धन्यवाद देते हुए लिखा कि हमने 'हिन्दू और हिन्दुस्तान' शब्द की उत्पत्ति को ऋग्वेद के श्लोक से हल कर लिया।

समीक्षा-

सर्वप्रथम यहाँ यह स्पष्ट कर देना अत्यावश्यक है कि वेद की ऋचाओं को मन्त्र कहते हैं, श्लोक नहीं। ऐसा इसलिए क्योंकि वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है, मनुष्यकृत नहीं। उनका नाम मन्त्र इसलिए है कि उनसे सत्यविद्याओं का ज्ञान होता है। सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य में ऐसा एक भी संस्कृत वाक्य नहीं है जो सिद्ध कर सके कि श्लोक ही वेद हैं। इसके विपरीत ऐसे वाक्य अवश्य हैं जिनसे सिद्ध होता है कि मन्त्र नाम वेद के हैं। अष्टाध्यायी में आया यह सूत्र-

'मन्त्रे घसह्वरणशवृदहाद्वृच्कृगमिजनिभ्यो लेः। (२/४/८०)

मेरे कथन का प्रबल प्रमाण है।

मैं आप दोनों के संज्ञान के लिए यह स्पष्ट कर दूँ कि 'हिन्दू और हिन्दुस्तान' शब्द का वेदों में कहीं वर्णन नहीं है। आपने अपनी पोस्ट में जो प्रमाण दिया है उसे मैं यथावत् लिखता हूँ-

'ऋग्वेद के बृहस्पति आगम में हिन्दू शब्द-

हिमालयं समारभ्य यावत् इन्दु सरोवरं।
तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते।।

हिमालय पर्वत से शुरू होकर भारतीय महासागर तक फैला हुए ईश्वर निर्मित देश को हिन्दुस्थान कहा जाता है।'

आपका शोध बिल्कुल वैसा ही है जैसे बन्दर के हाथ में आईना। आपके दिए प्रमाण से प्रतीत होता है कि आपने कभी वेदों के दर्शन भी नहीं किये हैं। प्रथम तो यह बतलाने का कष्ट करें कि बृहस्पति आगम का ऋग्वेद से क्या सम्बन्ध है? क्या अपने श्लोक का पूरा सन्दर्भ लिखते समय आपके हाथ काँप रहे थे? आपने अपने कपोलकल्पित श्लोक को पवित्र ग्रन्थ वेद से जोड़कर वेदों की अवहेलना की है। हिन्दू और हिन्दुस्तान शब्द वेद तो क्या, दर्शनशास्त्र, उपनिषद्, महाभाष्य, स्मृतिग्रन्थ, सूत्रग्रन्थ, नीतिशास्त्र इत्यादि में भी नहीं मिलता। वैदिक साहित्य में मनुष्यों के लिए 'आर्य' शब्द का प्रयुक्त हुआ है और इनका निवास स्थान 'आर्यावर्त्त' बतलाया है। बाद में यहाँ एक प्रतापी चक्रवर्ती राजा 'भरत' के नाम से हुआ, और इनके नाम पर ही यही आर्यावर्त्त 'भारतवर्ष' के नाम से जाना गया। 'हिन्दू और हिन्दुस्तान' का संस्कृत साहित्य से कोई लेना-देना नहीं है। मैं इस पक्ष में भारतीय इतिहासकारों तथा हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकारों के भी विचार प्रस्तुत करता हूँ-

१. हिन्दी भाषा के सुविख्यात् लेखक श्रीयुत् रायबहादुर पण्डित गौरीशंकर हीराचन्द ओझा अपनी पुस्तक 'राजपूताने का इतिहास' में लिखते हैं-

'हिन्दू नाम विक्रम संवत् की ७वीं शताब्दी से पूर्व के ग्रन्थों में नहीं मिलता है।' - पहली जिल्द, पृष्ठ ४२, टिप्पणी सं०३ , द्वितीय

संस्करण १९३७, वैदिक यन्त्रालय, अजमेर से प्रकाशित

इतना ही नहीं, हिन्दी सहित्य सम्मेलन के सभापति और सनातन धर्म के परम प्रेमी स्वर्गीय श्रीयुत् पं. गोविन्दनारायण मिश्र जी का आप वह निबन्ध पढ़ें जिसे पण्डित जी ने सन् १९११ में सम्पन्न द्वितीय हिन्दी सम्मेलन के सभापति की स्थिति में पढ़ा था–

'इसमें कोई सन्देह नहीं कि फारसी भाषा में गुलाम वा काले रंग के अर्थ में प्रयुक्त होने के अतिरिक्त हिन्दू शब्द का गौरववाचक अर्थ से सम्बन्ध मात्र नहीं है। इधर प्राचीन शास्त्रों में वेद या मनु आदि स्मृति, पुराण, उपपुराण आदि ग्रन्थों में उक्त हिन्दू शब्द का कहीं नामोल्लेख नहीं दीखता।'

२. यहाँ एक और ऐतिहासिक घटना का उल्लेख करना चाहूँगा। घटना सन् १८७० की है अर्थात् आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के काशी के पण्डितों से शास्त्रार्थ के एक वर्ष बाद की। जब काशी के पौराणिक पण्डितों ने संस्कृत शास्त्रों में हिन्दू शब्द नहीं पाया तो स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती समेत कई पण्डितों ने काशी के टेढ़ी नीम तले श्रीमहाराजाधिराज संरक्षित धर्म-सभा में एक बैठक की। जिसमें ४४ पण्डितों ने इस पक्ष में हस्ताक्षर किया कि हिन्दू कहावना सर्वथा अनुचित है। इसमें ४४वां हस्ताक्षर प्रसिद्ध कविराज श्री दुर्गादत्त शर्मा का था, जिन्होंने यह पंक्तियाँ लिखते हुए हस्ताक्षर किया था–

काफिर को हिन्दू कहत, यवन स्व भाषा माहिं।
ताते हिन्दू नाम यह, उचित कहैबो नाहिं।।

यह व्यवस्थापत्र स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संगृहीत पुराने कागजों में प्राप्त हुआ था जिसे सहयोगी अर्जुन ने प्रकाशित कराया था। यह जानकारी दैनिक भारतमित्र तारीख २० मई १९२५ में भी प्रकाशित हुई थी।

'हिन्दू और हिन्दुस्तान' शब्द का उल्लेख प्राचीन संस्कृत साहित्यों में नहीं है, इसे सिद्ध करने के लिए उपरोक्त प्रमाण पर्याप्त हैं। इसके अतिरिक्त मेरी आपको खुली चुनौती भी है कि हमें बस शास्त्रों में वो प्रकरण दिखा दें जहाँ भगवान् शिव, भगवान् राम, भगवान् कृष्ण, माता सीता, माता रुक्मिणी, पवनपुत्र हनुमान आदि को हिन्दू कहकर सम्बोधित किया गया हो। हमें समस्या इससे नहीं है कि हम हिन्दू शब्द का भार ढो रहे हैं, बल्कि समस्या इससे है कि आप लोग बिना किसी प्रमाण वा शोध के कुछ भी बरगलाते हैं और उसकी आड़ में हमारे धर्मग्रन्थों को दूषित करते हैं, उनकी अवहेलना करते हैं। हिन्दू तो हमारे ही भाई हैं। हमें उनसे कोई वैर नहीं है लेकिन यदि कोई वेदों पर व्यर्थ का आक्षेप करेगा तो उसके मुखमर्दन हेतु हमारी लेखनी सदैव चलती रहेगी, फिर चाहे वह कोई राजनेता या किसी अन्य सम्प्रदाय का ही व्यक्ति क्यों न हो। अब आप दोनों के प्रति उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी। आगे आवश्यकतानुसार अन्य शास्त्रीय प्रमाण भी दिए जायेंगे। इत्योम् शम्।।

समीक्षक- प्रियांशु सेठ

डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी से प्रायः लोग परिचित हैं। उनकी जागरूकता प्रसंशनीय है। एक विडम्बना यह रही है कि जिन्होंने वेद पढ़े नहीं अथवा पढ़े तो पाश्चात्य विद्वानों के चश्में से पढ़े हैं, फिर वे चाहे विद्वद्वरेण्य डॉ. सम्पूर्णानन्द हों अथवा तिलक वेद के बारे में लिखकर भ्रान्ति ही फैला पाये हैं। ऐसा ही कार्य स्वामी ने किया है। हमें फेसबुक पर प्रियांशु जी की यह पोस्ट दिखी। इसका उत्तर डॉ. स्वामी से मिले अथवा नहीं परन्तु यह संक्षिप्त पोस्ट प्रचारित अवश्य की जानी चाहिए यहसोचकर इसे सत्यार्थ सौरभ में दे रहे हैं। –सम्पादक

महाशय लोटन सिंह आर्य को विनम्र श्रद्धांजलि

अलीगढ़ जनपद के सुखरावली ग्राम में ५ जनवरी १९२६ को श्री बिहारी सिंह व श्रीमती साहब कौर के घर जन्मे महाशय लोटन सिंह जी की जीवन यात्रा १९ अप्रैल २०२१ को पूर्ण हो गई। बाल्यकाल से ही आध्यात्मिक व धार्मिक प्रवृत्ति के थे, अलीगढ़ के डी. ए. वी. इण्टर कॉलेज से मैट्रिक तक की शिक्षा ग्रहण की, कृषि कार्य करते हुए उन्नत कृषक का सम्मान पाया, १९७६ में रेडियो पर कृषक चर्चा में भाग लिया।

१९७६ में ही आर्यसमाज से जुड़े और दृढ़ता के साथ दैनिक यज्ञ का संकल्प लिया, एक पुत्री को कन्या गुरुकुल हाथरस व पुत्र को आर्ष गुरुकुल एटा (डॉ. विनय विद्यालंकार) में प्रविष्ट कराकर अगली पीढ़ियों के लिए आर्यसमाज की नींव डाली, महात्मा प्रेमभिक्षु जी द्वारा स्थापित सत्यप्रकाशन तपोभूमि-मथुरा से जुड़े रहे। पूरे क्षेत्र में महाशय जी के नाम से प्रसिद्धि पाई, रामघाट मार्ग (आगरा- मुरादाबाद हाइवे) पर अपनी भूमि में महर्षि दयानन्द नगर कॉलोनी बनाकर उसमें बड़े भूभाग पर 'महर्षि दयानन्द साधना आश्रम' की स्थापना की। अलीगढ़ के निकट 'कन्या गुरुकुल भयां चामड़' में तीन बीघा भूमि क्रय करके दान स्वरूप दी। महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा को अनेक गौएँ, परोपकारिणी सभा अजमेर में साहित्य प्रकाशन हेतु एक लाख व कक्ष निर्माण हेतु भी एक लाख का दान २००५ में दिया। स्वामी सर्वदानन्द गुरुकुल साधु आश्रम, सार्वदेशिक सभा, दिल्ली सभा, गुरुकुल गौमत-अलीगढ़, दयानन्द सेवाश्रम संघ दिल्ली, आदि अनेक संस्थाओं में अपनी पवित्र राशि से दान की आहुति लगाते रहे। हजारों सत्यार्थप्रकाश निजी राशि से क्रय कर निशुल्क-अल्प मूल्य पर वितरित किए। अन्तिम समय तक प्रतिदिन का यज्ञ ५०० ग्राम घृत से होता रहा। अपने जीवन में अनेक वेद पारायण यज्ञ अपने बनाए आश्रम व पैतृक गाँव में करवाए।

इस प्रकार अपने जीवन को महर्षि दयानन्द जी व आर्यसमाज मिशन को समर्पित कर ९२ वर्ष की आयु में 'ओंकार' का उच्चारण करते हुए अपने पुत्र डॉ. विनय विद्यालंकार के हाथ को दृढ़ता से पकड़कर मानो आर्यसमाज के कार्यों का दायित्व सौंपकर अन्तिम श्वास ली। – डॉ. विनय विद्यालंकार

हमें हर हाल में गलत बीज बीजने बन्द करने होंगे

पंजाबी भाषा के रचनाकार डॉ० श्यामसुन्दर दीप्ति की एक लघुकथा बीज पढ़ रहा था। कश्मीर सिंह अपने दोस्त सुरजन सिंह के साथ अपने बेटे दिलदार का, जिसकी एक अच्छे सरकारी पद पर नियुक्ति हुई है और जो अपने कॉलेज का बैस्ट एथलीट रहा है, मेडिकल करवाने सिविल सर्जन के दफ्तर पहुँचता है। जाँच के बाद डॉक्टर ने बताया कि दिलदार का ब्लड प्रेशर ज्यादा है। इस बात पर कश्मीर सिंह को गुस्सा आ जाता है। इस पर उसका दोस्त सुरजन सिंह कहता है, 'चल छोड़। ये इस तरह ही करते हैं। पाँच सौ रुपए माँगता होगा और क्या? मार मुँह पर।' सुरजन सिंह के ये कहने पर कश्मीर सिंह कहता है, 'पाँच-चार सौ की बात नहीं सुरजन मियां। बात यह है कि इसने दिलदार के दिल में बीज गलत बीज दिया है और कुछ नहीं।' लघुकथा में कश्मीर सिंह का कथन बहुत महत्त्वपूर्ण है। आज जिधर नजर डालिए गलत बीज बीजे जाते मिल जाएँगे।

ये गलत बीज ही ईमानदारी और नैतिकता की राह में सबसे बड़ी रूकावट हैं। ये गलत बीज ही बढ़ते हुए भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण हैं। जब हमारे साथ बार-बार ऐसा होता है तो मन में यही ख्याल आता है कि क्यों न हम भी ऐसा ही करें? अधिकांश युवक जब अपने कार्यक्षेत्र में पदार्पण करते हैं तो उनके मन में अपने कार्य करने के क्षेत्र में अच्छे से अच्छा करने का उत्साह होता है। साथ ही अनेक युवक ईमानदारी से अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के साथ-साथ हर जगह व्याप्त भ्रष्टाचार मिटाने के संकल्प के साथ नौकरी अथवा सेवा के क्षेत्र में आते हैं लेकिन उपरोक्त गलत बीजों के बीजे जाने के कारण उनका उत्साह व संकल्प धरे के धरे रह जाते हैं। अन्ततोगत्वा वे भी गलत बीज बीजने के काम में लग जाते हैं।

शिक्षा का मनुष्य के जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस की शुरूआत भी प्रायः गलत बीज बीजने से होती है। सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद अधिकांश अच्छे स्कूलों में मोटे डोनेशन के बिना दाखिला नहीं मिलता। यही कारण है कि हम अपने बच्चों को एक अच्छा इंसान बनाने की बजाय एक बड़ा आदमी बनाने को विवश हैं। और बड़ा आदमी बनाने के लिए चाहे जो करना पड़े। चाहे जैसे बीज बीजने पड़ें। लेकिन ये वास्तविकता है कि हर बच्चे को पता होता है कि उसके दाखिले के लिए कितनी रिश्वत दी गई। स्कूलों में किस तरह से अभिभावकों और शिक्षकों से चीटिंग की जाती है। शिक्षक भी ईमानदारी से पढ़ाना चाहते हैं लेकिन जब उनसे चालीस हजार पर दस्तखत करवाकर मात्र बारह-पंद्रह हजार रुपए उनकी हथेली पर रख दिए जाते हैं तो इसका किसी पर भी अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा।

डॉक्टरी जैसे सम्मानित पेशे का व्यक्ति भी जब रिश्वत लेने को विवश हो तो ये एक गम्भीर बात है लेकिन इसके मूल में गलत बीज बीजे जाने का ही असर है। बेशक डॉक्टरी की पढ़ाई बहुत अधिक श्रमसाध्य व व्ययसाध्य है और निजी मेडिकल कॉलेजों में प्रायः मोटा डोनेशन देने पर ही प्रवेश

मिलता है लेकिन इसका ये अर्थ तो नहीं कि एक डॉक्टर गलत तरीकों से अपने मरीजों से पैसे ऐंठे। सरकारी अस्पतालों में आज भी अनेक ऐसे डॉक्टर हैं जो निःस्वार्थ भाव से मरीजों का उपचार करते हैं। कई प्राइवेट डॉक्टर भी बहुत कम या नाममात्र की फीस लेकर रोगियों का उपचार

करते हैं। तो ऐसे डॉक्टर बाकी डॉक्टरों के रोल मॉडल क्यों नहीं बनते? एक डॉक्टर द्वारा ईमानदारी से काम करने पर भी उचित आय और संतुष्टि मिलना मुश्किल नहीं।

आज जहाँ नजर डालिए गलत बीज ही बीजे जाते दिखलाई पड़ेंगे। तो क्या इस कारण से बाकी लोगों को अनैतिक होने अथवा भ्रष्ट आचरण करने की छूट दे दी जाए? कदापि नहीं। माना कि हमारे मार्ग में कुछ लोगों ने गलत बीज बीज दिए लेकिन जिन लोगों ने हमारे मार्ग में सही बीज बीजे हमें वे क्यों नहीं दिखलाई पड़ते? हम उनकी तरह सिर्फ अच्छे बीज क्यों नहीं बीजते? आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने एक निबन्ध 'क्या निराश हुआ जाए?' में एक स्थान पर लिखते हैं, 'एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए ग़लती से दस के बजाय सौ रुपये का नोट दे दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकण्ड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिए और बोला, 'यह बहुत बड़ी ग़लती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।' उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।'

उपरोक्त घटना से कई चीज़ें स्पष्ट होती हैं जैसे हर दौर में अच्छे, ईमानदार और विनम्र व्यक्ति मौजूद होते हैं तथा जीवन में जब भी हम अच्छाई, ईमानदारी और विनम्रता आदि उदात्त गुणों का निर्वाह करते हैं तो इससे न केवल हमारे चेहरे पर संतुष्टि का भाव झलकने लगता है अपितु हमारे व्यक्तित्व में भी इसकी गरिमा दिखलाई पड़ने लगती है। अपने बीते हुए दिनों और घटनाओं पर थोड़ा दृष्टिपात कीजिए। आपने भी अपने जीवन में अवश्य ही अनेकानेक बार ऐसी ही अच्छाई, ईमानदारी, कर्त्तव्यपालन और विनम्रता आदि गुणों का परिचय दिया होगा। उस समय आपकी मनोदशा कैसी थी और उस मनोदशा का आपके स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ा था। ज़रा याद करने की कोशिश कीजिए। जब भी हम ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का पालन करते हैं, किसी की मदद करते हैं अथवा अन्य कोई अच्छा कार्य करते हैं तो इससे न केवल हमारे चेहरे पर संतुष्टि का भाव झलकने लगता है और हमारा व्यक्तित्व गरिमापूर्ण दिखलाई पड़ने लगता है अपितु हमारे स्वास्थ्य में भी सकारात्मक परिवर्तन हो जाता है।

ईमानदारी मनुष्य का एक सर्वोत्तम गुण है। ईमानदारी का मनुष्य के व्यक्तित्व पर न केवल सकारात्मक प्रभाव पड़ता है अपितु ईमानदार मनुष्य का स्वास्थ्य भी बेईमान लोगों के मुक़ाबले में बहुत अच्छा पाया जाता है। जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का पालन करता है, किसी की सहायता करता है अथवा निःस्वार्थ सेवा करता है उसे अत्यन्त संतुष्टि और आनन्द की प्राप्ति होती है। ईमानदारी की अवस्था में भी अत्यन्त संतुष्टि और आनन्द की प्राप्ति होती है। संतुष्टि और आनन्द की अवस्था में व्यक्ति तनावमुक्त होकर स्वस्थ हो जाता है। अतः ईमानदारी की अवस्था मनुष्य के अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त उपयोगी होती है। बेईमान व्यक्ति के चेहरे से जहाँ हमेशा धूर्तता टपकती रहती है वहीं ईमानदार व्यक्ति का चेहरा सदैव आत्मविश्वास की गरिमा से दमकता रहता है व प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण सबके आकर्षण का केन्द्र बन जाता है।

यह वास्तविकता है कि आज बहुत से लोग केवल उन क्षेत्रों में ही नौकरी करना चाहते हैं जहाँ ऊपर की कमाई भी हो और मोटी कमाई हो लेकिन मनुष्य और समाज के संतुलित विकास के लिए भ्रष्टाचार के इस दुष्चक्र को तोड़ना अनिवार्य है। इसका एक ही उपाय है और वो ये है कि हमारे मार्ग में जो गलत बीज बीजे गए हम उनको भूलकर केवल सही बीजे गए बीजों को याद रखें और केवल उनका अनुकरण करें।

सीताराम गुप्ता
ए. डी.-106-सी, पीतमपुरा
दिल्ली-110034, फोन नं. 09555622323

नहीं रहें आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता

अत्यन्त दुःखद समाचार ज्ञात हुआ है कि हमारे अपने अत्यन्त स्नेही, वैदिक धर्म के दीवाने, जो जहाँ गए वेदप्रचार के पर्याय बन गए, न्यास के जन्म से ही जो इसके अंग-संग बन गए, कोई कार्य ऐसा नहीं जो उन्हें बताया गया हो और उन्होंने सोत्साह सम्पन्न न किया हो, ऐसे कर्मठ आर्यश्रेष्ठ श्री मूलाराम आर्य हमारे मध्य नहीं रहे।

वे न्यास द्वारा आयोज्य सत्यार्थप्रकाश महोत्सवों की नींव के पत्थर थे। गाँव में निवास के बाद भी वे ठीक समय पर उपस्थित हो जाते थे। उनकी स्मृतियों को निःसंदेह शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। उनका जाना न्यास और उदयपुर के आर्यजनों की निजी क्षति है जो अपूरणीय है। ईश्वर उनकी आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करे यही प्रार्थना है। सत्यार्थ प्रकाश न्यास के सभी पदाधिकारियों एवं सत्यार्थ सौरभ से जुड़े सभी सज्जनों की ओर से निष्काम कर्मयोगी श्री मूलाराम आर्य जी को विनम्र श्रद्धांजलि।

हिन्दी वालों की हिन्दी वालों से हिन्दी के लिए लड़ाई

- डॉ. अमरनाथ

पूजनीय बड़े पिता जी और माता जी! आप लोग मुझे माफ कर देना। मैं आपका अच्छा बेटा नहीं बन पाया...... मैं जा रहा हूँ। मैं जिन्दगी से परेशान हो गया हूँ। आप लोग मुझे माफ करना।' राजीव के सुसाइड नोट का यह एक अंश है। ११ सितम्बर २०२० को यूपी पीसीएस का रिजल्ट आया। मेधावी छात्र राजीव पटेल को इस बार पूरी उम्मीद थी किन्तु चयन नहीं हुआ। वह दिन भर परेशान था और १२ की रात को उसने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

कहा जा सकता है कि असफल होने पर विद्यार्थियों द्वारा इस तरह की आत्महत्याएँ अब आम हो चुकी हैं। किन्तु राजीव की आत्महत्या इससे अलग थी। वह प्रतिभाशाली भी था और परिश्रमी भी। उसकी आत्महत्या के पीछे का कारण यह था कि उसने हिन्दी माध्यम से परीक्षा दी थी और आयोग द्वारा परीक्षा प्रणाली में किए गए बदलाव के कारण हिन्दी माध्यम इस वर्ष यूपीपीएससी के परीक्षार्थियों पर आफत का पहाड़ बनकर टूट पड़ा।

यूपीपीएससी में जहाँ पहले अंग्रेजी माध्यम से परीक्षा देने वाले दस से पन्द्रह प्रतिशत प्रतिभागी सफल होते थे वहाँ इस वर्ष नियमों में ऐसा परिवर्तन कर दिया गया कि चयनित अभ्यर्थियों में अंग्रेजी माध्यम वालों की संख्या लगभग दो तिहाई हो गई। ग्रामीण परिवेश के हिन्दी माध्यम वाले अभ्यर्थी औंधे मुँह गिर पड़े। कभी आईएएस-पीसीएस का हब कहे जाने वाले इलाहाबाद से अब इन सेवाओं में सफल होने वाले अभ्यर्थियों की संख्या नगण्य होती है। हिन्दी माध्यम वालों को दिए जाने वाले प्रश्न-पत्र भी आमतौर पर अस्पष्ट तथा विवादों के घेरे में रहते हैं क्योंकि वे मूलतः अंग्रेजी में तैयार किए गए प्रश्नों के अनुवाद होते हैं।

राजीव की आत्महत्या के बाद से हिन्दी माध्यम से परीक्षा देने वाले अभ्यर्थी प्रयागराज की सड़कों पर हैं। वे अहिंसात्मक तरीके से धरना प्रदर्शन कर रहे हैं, कैंडिल मार्च और जुलूस निकाल रहे हैं। ताकि यूपीपीएससी के चेयरमैन के दिल में हिन्दी के प्रति थोड़ी हमदर्दी पैदा हो सके। किन्तु डेढ़ महीने से ज्यादा बीत जाने के बाद भी चेयरमैन महोदय पीड़ित छात्रों के दुःख दर्द को सुनने के लिए समय नहीं निकाल सके। हाँ! उत्तर प्रदेश प्रतियोगी छात्र मंच के अध्यक्ष संदीप सिंह के अनुसार कोरोना काल में इकट्ठा होने के नाम पर आन्दोलन में शामिल छात्रों पर मुकदमा करके उनकी आवाज दबाने का प्रयास मुस्तैदी से किया जा रहा है।

दरअसल आज अंग्रेजी का जो वर्चस्व कायम है उसके लिए रास्ता साफ किया कांग्रेस सरकार ने। वैश्वीकरण के बाद १९९५ में होने वाले गैट समझौते से अंग्रेजी का तेजी से बढ़ता हुआ दबाव महसूस किया गया। यह उदारीकरण की स्वाभाविक परिणति थी। जब पश्चिम का माल आने लगा, पश्चिम की संस्कृति आने लगी तो पश्चिम की भाषा को भला कैसे रोका जा सकता था? इसके बाद २००५ में मनमोहन सिंह की सरकार द्वारा गठित ज्ञान आयोग ने जो संस्तुति की उससे अंग्रेजी के मार्ग का बचा खुचा अवरोध भी हट गया। ज्ञान आयोग के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने ४० लाख नए अंग्रेजी शिक्षकों को नियुक्त करने और तत्कालीन मौजूद शिक्षकों को अंग्रेजी में प्रशिक्षित करने की सलाह दे डाली। ऐसा तो गुलामी के दौर में मैकाले भी नहीं कर सका था।

इन्हीं परिस्थितियों में भाजपा की राष्ट्रवादी सरकार, स्वदेशी का नारा देती हुई सत्ता में आई। इसने कांग्रेस विहीन भारत का भी नारा दिया। इस सरकार से उम्मीद थी कि वह अंग्रेजी

की आँधी को रोकेगी और भारतीय संस्कृति की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का सम्मानजनक स्थान बहाल करने के लिए प्रभावी कदम उठाएगी। किन्तु इस सरकार ने जो किया वह सबसे बढ़कर था। इसने शिक्षा को पूरी तरह व्यापारियों के हवाले कर दिया और पिछली सरकारों ने जहाँ एक विषय के रूप में अंग्रेजी पढ़ाने पर जोर दिया था, इस सरकार ने अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम ही बना दिया।

मुख्यमंत्री बनने के बाद योगी आदित्यनाथ जी ने २०१७ में सबसे पहला काम यह किया कि प्रदेश के पाँच हजार प्राथमिक विद्यालयों को अंग्रेजी माध्यम में बदल दिया। निजी क्षेत्र के विद्यालय तो अंग्रेजी माध्यम के होते ही हैं, जो बचे-खुचे सरकारी विद्यालय हैं उनको भी अंग्रेजी माध्यम में बदल देने के पीछे का तर्क मेरी समझ में आजतक नहीं आया। जनता ने इसकी माँग की हो, इसके लिए कोई आन्दोलन किया हो, ऐसा भी सुनने में नहीं आया था। इतना बड़ा निर्णय लेने के पहले योगी आदित्यनाथ जी ने विशेषज्ञों की समिति बनाकर उनसे कोई सुझाव लेना या पूर्व में गठित आयोगों की सिफारिशों को देखना भी जरूरी नहीं समझा। अखबारों से जो सूचनाएँ मिलीं उनसे पता चला कि अभिभावकों की व्यापक माँग को ध्यान में रखते हुए योगी जी ने यह निर्णय लिया था। मुझे मुंशी प्रेमचन्द द्वारा कहा गया एक प्रसंग याद आ रहा है। उन्होंने एक बार जौनपुर के एक मुस्लिम परिवार के बच्चों को थोड़ी अंग्रेजी पढ़ लेने की सलाह दी थी तो उस परिवार के मुखिया ने अंग्रेजी को 'टर्र टर्र की भाषा' कहकर उसकी खिल्ली उड़ाई थी और कहा था कि फारसी पढ़कर उनके घर के तीन लोग मुंसिफ हैं और आराम से बैठे-बैठे फैसले सुनाते हैं, फिर वे टर्र टर्र की भाषा (अंग्रेजी के बहुत से शब्दों के साथ 'टर' जुड़ा है जैसे कलक्टर, बैरिस्टर, इंस्पेक्टर आदि) पढ़ने की जहमत क्यों उठाएँ? मैंने बचपन में भोजपुरी की एक कहावत भी सुनी थी- 'पढ़ें फारसी बेचें तेल-यह देखों किस्मत का खेल।' यानी, उस जमाने में फारसी पढ़ने वाले को तेल बेचने की नौबत नहीं आ सकती थी। फारसी उन दिनों कचहरियों तथा सरकारी काम-काज की भाषा थी और उसका बहुत सम्मान था। यह सही है कि फारसी हमारे देश के किसी प्रान्त की भाषा नहीं थी किन्तु हुकूमत करने वालों की भाषा वही थी। उन दिनों जनतंत्र तो था नहीं। जनता के ऊपर फारसी लाद दी गई और पूरे छह सौ साल तक फारसी हमारे देश पर शासन करती रही। ठीक वही स्थिति आज अंग्रेजी की है। यद्यपि आज हम एक जनतंत्र में रह रहे हैं।

आज यदि अभिभावक अंग्रेजी माध्यम की माँग कर भी रहे हैं तो उसका कारण स्पष्ट है। अंग्रेजी पढ़ने से नौकरियाँ मिलती हैं। जब चपरासी तक की नौकरियों में भी सरकार अंग्रेजी अनिवार्य करेगी तो अंग्रेजी की माँग बढ़ेगी ही। यह एक ऐसा मुल्क बन चुका है जहाँ का नागरिक चाहे देश की सभी भाषाओं में निष्णात हो किन्तु एक विदेशी भाषा अंग्रेजी न जानता हो तो उसे इस देश में कोई नौकरी नहीं मिल सकती और चाहे वह इस देश की कोई भी भाषा न जानता हो और सिर्फ एक विदेशी भाषा अंग्रेजी जानता हो तो उसे इस देश की छोटी से लेकर बड़ी तक सभी नौकरियाँ मिल जाएँगी। छोटे से छोटे पदों से लेकर यूपीएससी तक की सभी भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी का दबदबा है। वन सेवा, चिकित्सा सेवा, इंजीनियरिंग सेवा, रक्षा सेवा आदि में तो केवल अंग्रेजी में ही लिखने की अनिवार्यता है। पता चला है कि इस वर्ष यूपीएससी में ९७ प्रतिशत अंग्रेजी माध्यम वाले अभ्यर्थी ही सफल हुए हैं। उच्चतम न्यायालय से लेकर देश के पच्चीस में से इक्कीस उच्च न्यायालयों में किसी भी भारतीय भाषा का प्रयोग नहीं होता है। यह ऐसा तथाकथित आजाद मुल्क है

जहाँ के नागरिक को अपने बारे में मिले फैसले को समझने के लिए भी वकील के पास जाना पड़ता है और उसके लिए भी वकील को पैसे देने पड़ते हैं। मुकदमों के दौरान उसे पता ही नहीं चलता कि वकील और जज उसके बारे में क्या सवाल-जबाब कर रहे हैं। ऐसे माहौल में कोई अपने बच्चे को अंग्रेजी न पढ़ाने की भूल कैसे कर सकता है? दरअसल, अंग्रेजी इस देश के विकास में सबसे बड़ी बाधा है। सुदूर गाँवों में दबी प्रतिभाओं, जिनमें ज्यादातर दलित और आदिवासी हैं, को मुख्य धारा में शामिल होने से रोकने में अंग्रेजी सबसे बड़ा अवरोध बनकर खड़ी है। हाल ही में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'द इंग्लिश मीडियम मिथ' में संक्रान्त सानु ने प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद के आधार पर दुनिया के सबसे अमीर और सबसे गरीब, बीस-बीस देशों

की सूची दी है। बीस सबसे अमीर देशों के नाम हैं, क्रमशः- स्विट्जरलैंड, डेनमार्क, जापान, अमेरिका, स्वीडेन, जर्मनी, आस्ट्रिया, नीदरलैंड, फिनलैंड, बेल्जियम, फ्रांस, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, इटली, कनाडा, इजराइल, स्पेन, ग्रीस, पुर्तगाल और साउथ कोरिया। इन सभी देशों में उन देशों की जनभाषा ही सरकारी कामकाज की भी भाषा है और शिक्षा के माध्यम की भी।

इसके साथ ही उन्होंने दुनिया के सबसे गरीब बीस देशों की भी सूची दी है। इस सूची में शामिल हैं क्रमशः- कांगो, इथियोपिया, बुरुंडी, सीरा लियोन, मालावी, निगेर, चाड, मोजाम्बीक, नेपाल, माली, बुरुकिना, फैसो, रवान्डा, मेडागास्कर, कंबोडिया, तंजानिया, नाइजीरिया, अंगोला, लाओस, टोगो और उगान्डा। इनमें से सिर्फ एक देश नेपाल है जहाँ जनभाषा, शिक्षा के माध्यम की भाषा और सरकारी कामकाज की भाषा एक ही है नेपाली। बाकी उन्नीस देशों में राजकाज की भाषा और शिक्षा के माध्यम की भाषा भारत की तरह जनता की भाषा से भिन्न कोई न कोई विदेशी भाषा है। इस उदाहरण से आसानी से समझा जा सकता है कि अंग्रेजी माध्यम हमारे देश के विकास में कितनी बड़ी बाधा है।

वास्तव में व्यक्ति चाहे जितनी भी भाषाएँ सीख ले किन्तु वह सोचता अपनी भाषा में ही है। हमारे बच्चे दूसरे की भाषा में पढ़ते हैं फिर उसे अपनी भाषा में सोचने के लिए अनूदित करते हैं और लिखने के लिए फिर उन्हें दूसरे की भाषा में ट्रान्सलेट करना पड़ता है। इस तरह हमारे बच्चों के जीवन का एक बड़ा हिस्सा दूसरे की भाषा सीखने में चला जाता है। इसीलिए मौलिक चिन्तन नहीं हो पाता। मौलिक चिन्तन सिर्फ अपनी भाषा में ही हो सकता है। पराई भाषा में हम सिर्फ नकलची पैदा कर सकते हैं। अंग्रेजी माध्यम वाली शिक्षा सिर्फ नकलची पैदा कर रही है।

जब अंग्रेज नहीं आए थे और हम अपनी भाषा में शिक्षा ग्रहण करते थे तब हमने दुनिया को बुद्ध और महावीर दिए, वेद और उपनिषद् दिए, दुनिया का सबसे पहला गणतंत्र दिया, चरक जैसे शरीर विज्ञानी और शुश्रुत जैसे शल्य-चिकित्सक दिए, पाणिनि जैसा वैयाकरण और आर्य भट्ट जैसे खगोलविज्ञानी दिए, पतंजलि जैसे योगाचार्य और कौटिल्य जैसे अर्थशास्त्री दिए। तानसेन जैसा संगीतज्ञ, तुलसीदास जैसा कवि और ताजमहल जैसी अजूबा इमारत दिए। हमारे देश में तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालय थे जहाँ दुनिया भर के विद्यार्थी अध्ययन करने आते थे। इस देश को 'सोने की चिड़ियाँ' कहा जाता था जिसके आकर्षण में ही दुनिया भर के लुटेरे यहाँ आते रहे। प्रस्तावित नई शिक्षा नीति में भी भारत के अतीत का गौरव-गान किया गया है और विश्व गुरु बनने का सपना भी देखा गया है (द्रष्टव्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२०पृष्ठ-४)। किन्तु इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया गया है कि भारत की उक्त समस्त उपलब्धियाँ अपनी भाषाओं में अध्ययन का परिणाम थीं।

इसी तरह नई शिक्षा नीति में प्राचीन समृद्ध सभ्यताओं में भारत, मेसोपोटामिया, मिस्र, चीन और ग्रीस तथा आधुनिक सभ्यताओं में संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, इजराइल, दक्षिण कोरिया और जापान को आदर्श के रूप में रेखांकित किया गया है (द्रष्टव्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२०पृष्ठ ७२)। नीति निर्माताओं से पूछा जाना चाहिए कि क्या उपर्युक्त में से कोई भी देश पराई भाषा को अपने विद्यार्थियों की शिक्षा का माध्यम बनाता है? या राज-काज का काम पराई भाषा में करता है?

हमारे प्रधानमंत्री जी ने जापान की तकनीक और कर्ज के बल पर जिस बुलेट ट्रेन की नींव रखी है उस जापान की कुल आबादी सिर्फ १२ करोड़ है। वह छोटे-छोटे द्वीपों का समूह है। वहाँ का तीन चौथाई से अधिक भाग पहाड़ है और सिर्फ १३ प्रतिशत हिस्से में ही खेती हो सकती है। फिर भी वहाँ सिर्फ भौतिकी में १३ नोबेल पुरस्कार पाने वाले वैज्ञानिक हैं। ऐसा इसलिए है कि वहाँ शत प्रतिशत जनता अपनी भाषा 'जापानी' में ही शिक्षा ग्रहण करती है। इसी तरह जिस इजराइल के विकास पर वे मुग्ध हैं उस इजराइल की कुल आबादी मात्र ८३ लाख है और वहाँ ११ नोबेल पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिक हैं क्योंकि वहाँ भी उनकी अपनी भाषा 'हिब्रु' में शिक्षा दी जाती है।

हमारा पड़ोसी चीन उसी तरह का बहुभाषी विशाल देश है

जिस तरह का भारत। किन्तु उसने भी अपनी एक भाषा चीनी (मंदारिन) को प्रतिष्ठित किया और उसे वहाँ पढ़ाई का माध्यम बनाया। चीनी बहुत कठिन भाषा है। चीनी लिपि

दुनिया की संभवतः सबसे कठिन लिपियों में से एक है। वह चित्र-लिपि से विकसित हुई है। आज चीन जिस ऊँचाई पर पहुँचा है उसका सबसे प्रमुख कारण यही है कि उसने अपने देश में शिक्षा का माध्यम और राजकाज की भाषा अपने देश की चीनी भाषा को बनाया।

जिस अमेरिका और इंग्लैंड की अंग्रेजी हमारे बच्चों पर लादी जा रही हैं उसी अमेरिका और इंग्लैण्ड में पढ़ाई के लिए दूसरे देश से जाने वाले हर सख्स को आइइएलटीएस (इंटरनेशनल इंग्लिश लैंग्वेज टेस्टिंग सिस्टम) अथवा टाफेल (टेस्ट आफ इंग्लिश एज फारेन लैंग्वेज) जैसी परीक्षाएँ पास करनी अनिवार्य हैं। दूसरी ओर, हमारे देश के अधिकांश अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों में बच्चों को अपने देश की राजभाषा हिन्दी या मातृभाषा बोलने पर दण्डित किया जाता

है और हमारी सरकारें कुछ नहीं बोलतीं। यह गुलामी नहीं तो क्या है? बेशक गोरों की नहीं, काले अंग्रेजों की गुलामी।

इससे ज्यादा आश्चर्य की बात क्या हो सकती है कि जिस राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२० की भूरि-भूरि प्रशंसा की जा रही है, हिन्दी-हितैषी सरकार की उस शिक्षा नीति में हिन्दी का कहीं जिक्र तक नहीं है। यदि यह शिक्षा नीति लागू हो गई तो हिन्दी सिर्फ जनता के बोलचाल, गीत-गवनई और मनोरंजन की भाषा बनकर रह जाएगी।

आज जरूरत है सबके लिए समान, पूरी तरह मुफ्त और सबको अपनी मातृभाषाओं में गुणवत्ता युक्त शिक्षा की। संविधान का मूल संकल्प हमें 'अवसर की समानता' का अधिकार देता है। संविधान का अनुच्छेद ५१ए भी देश के प्रत्येक नागरिक और बच्चों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाली समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार देता है।

प्रश्न यह है कि आजादी की तीन चौथाई सदी बीत जाने के बाद भी सबको समान, मुफ्त और उनकी मातृभाषाओं में शिक्षा क्यों उपलब्ध नहीं कराई जा रही है? यदि सरकार चाहे तो यह सिर्फ चार-पाँच वर्षों में सम्भव है। केन्द्रीय विद्यालयों जैसे विद्यालय देश के सभी हिस्सों में आवश्यकतानुसार क्यों नहीं बन सकते? नई शिक्षा-नीति में भी शिक्षा के लिए जी.डी.पी. का छह प्रतिशत तय किया गया है। पहले की सरकारें भी शिक्षा के मद में लगभग इतना ही निर्धारित करती थीं किन्तु खर्च मात्र ढाई-तीन प्रतिशत ही करती थीं। शिक्षा का बजट कम से कम नौ से दस प्रतिशत तक होना चाहिए। आज देश का हर नागरिक अपनी आमदनी का एक बड़ा हिस्सा अपने बच्चों की शिक्षा पर खर्च करता है। यदि सरकार खुद बेहतर और सस्ती शिक्षा उपलब्ध कराती है तो जनता उसके लिए कुछ अधिक टैक्स देकर भी बहुत अधिक लाभ में रहेगी क्योंकि शिक्षा के नाम पर निजी शिक्षण संस्थानों की लूट से वह मुक्त हो जाएगी।

१८ अगस्त २०१५ को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसला दिया था। इस फैसले में माननीय हाईकोर्ट ने आदेश दिया था कि राजकीय कोष से वेतन पाने वाले सभी नौकरशाहों, सरकारी कर्मचारियों, जन प्रतिनिधियों आदि के बच्चों कों सरकारी विद्यालयों में ही शिक्षा दी जाय। यदि ऐसा हो सके तो देश की शिक्षा व्यवस्था का कायाकल्प होने में समय नहीं लगेगा। कल्पना करें कि जिस प्राथमिक विद्यालय में जिले के जिलाधिकारी का बच्चा पढ़ेगा उसमें क्या संसाधनों का अभाव रह पाएगा? किन्तु इलाहाबाद हाईकोर्ट का उक्त फैसला जहाँ देशभर में लागू होना चाहिए था, वहाँ अपने प्रदेश में ही उसे रद्दी की टोकरी में डाल दिया गया।

हमारे पड़ोस के देश भूटान में राज-परिवार के बच्चे भी सरकारी विद्यालयों में ही पढ़ते हैं। वहाँ भी निजी विद्यालय हैं किन्तु जिन बच्चों का प्रवेश सरकारी विद्यालयों में नहीं हो पाता वे ही निजी विद्यालयों में प्रवेश लेते है। हमारे दूसरे पड़ोसी चीन से लौटकर आने वाले लोग बताते हैं कि वहाँ

गाँव का सबसे सुन्दर भवन उस गाँव का विद्यालय होता है। नई शिक्षी-नीति में विदेशी विश्वविद्यालयों को आमंत्रित किया

गया है और देश में आने के लिए उन्हें सरकारी विश्वविद्यालयों जितनी सुविधाएँ देने की बात कही गई है। यदि ऐसा हुआ तो ज्ञान, सत्ता और प्रतिष्ठित नौकरी चंद सम्पन्न लोगों के हाथ में सिमट कर रह जाएगी। आखिर विदेशी विश्वविद्यालय हमारे देश में ज्ञान-दान करने तो आएँगे नहीं। वे यहाँ शिक्षा का व्यापार करने और उससे अधिक से अधिक मुनाफा कमाने के लिए आएँगे। ऐसी दशा में शिक्षा इतनी महंगी हो जाएगी कि वह देश की बहुसंख्यक आबादी की पहुँच से बाहर हो जाएगी। पश्चिमी देशों की तरह उच्च शिक्षा की अभिलाषा रखने वालों को शिक्षा के लिए कर्ज लेना होगा और उसके बाद जीवन का बड़ा हिस्सा उस कर्ज को चुकाने में गंवा देना पड़ेगा।

अंगेजी के महत्व को भला कैसे अस्वीकार किया जा सकता है? किन्तु हमें कितनी अंग्रेजी चाहिए? क्या हमारे दैनिक जीवन का अंग्रेजी में चलना हमारे और हमारे देश के हित में है? एक विषय के रूप में अंग्रेजी भाषा की शिक्षा देना बुरा नहीं है, किन्तु बचपन में ही शिक्षा के माध्यम के रूप में बच्चों पर अंग्रेजी थोप देना और उनकी अपनी भाषाएँ छीन लेना भीषण क्रूरता और अपराध है। इसके लिए भविष्य हमें कभी माफ नहीं करेगा।

जहाँ तक एक भाषा के रूप में अंग्रेजी सीखने का सवाल है, यूनेस्को का सुझाव है कि, 'यह स्वतः सिद्ध है कि बच्चे के लिए शिक्षा का सबसे बढ़िया माध्यम उसकी मातृभाषा है.... शैक्षिक आधार पर वह मातृभाषा के माध्यम से एक अनजाने माध्यम की अपेक्षा तेजी से सीखता है।' (भाषानीति के बारे में अंतर्राष्ट्रीय खोज, जोगा सिंह विर्क, पृष्ठ-४) इतना ही नहीं ब्रिटिश कौंसिल भी, जिसका काम ही अंग्रेजी सिखाना है, ठीक इसी तरह का सुझाव देता है।

दरअसल स्वदेशी, स्वभाषा, भारतीयता, राष्ट्रवाद आदि अपने सिद्धान्तों के विरुद्ध सरकार, हमारे बच्चों पर पराई भाषा अंग्रेजी इसलिए थोप रही है क्योंकि आज सरकार ही नहीं, किसी भी बड़े राजनीतिक दल के सामने मुख्य प्रश्न देश के विकास का नहीं है, संस्कृति का भी नहीं है। उनके सामने मुख्य प्रश्न कुर्सी का है और कुर्सी के लिए होने वाले चुनाव में खर्च, चंदा, कमीशन, रिश्वत आदि सबकुछ तो उद्योगपति ही देते हैं और इसमें सहयोग मिलता है ब्यूरोक्रेसी का। आज उद्योगपति ही नौकरशाहों की मिली-भगत से देश चला रहे हैं। सरकार अब उनके दलाल की भूमिका में है। इसीलिए उद्योगपतियों और नौकरशाहों के हित को ध्यान में रखकर ही कायदे-कानून बन रहे हैं। २०११ की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में अंग्रेजी भाषियों की संख्या .०२ प्रतिशत है। यानी, इस देश पर .०२ प्रतिशत अंग्रेजी बोलने वाले लोग ९९.९८ प्रतिशत भारतीय भाषाएँ बोलने वालों पर अंग्रेजी रूपी विलायती हथियार के बल पर शासन कर रहे हैं।

वैसे भी आज देश के बड़े औद्योगिक घरानों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को निरक्षर लेबर की जरूरत नहीं है। उन्हें और थोड़ी अंग्रेजी जानने वाले 'स्किल्ड लेबर' चाहिए। उन्हें ऐसे लेबर चाहिए जो जरूरत होने पर कम्प्यूटर पर भी हाथ फेर सकें। सुसंस्कृत मनुष्य अथवा मौलिक चिन्तन करने वाले विद्वान् या वैज्ञानिक तैयार करना अब नेताओं को अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारने जैसा लग रहा है। अकारण नहीं है कि आज बुद्धिजीवी ही सर्वाधिक निशाने पर हैं।

(लेखक कलकत्ता विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर और हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं)

शोक संवेदना

नहीं रहे आर्य भजन सम्राट पण्डित ओमप्रकाश वर्मा

दिनांक २५ अप्रैल २०२१ को आर्यजगत् के प्रसिद्ध आर्य भजन सम्राट पण्डित ओमप्रकाश वर्मा जी का आकस्मिक निधन हो गया। वर्मा जी ने बहुत कठिन परिस्थितियों में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार किया एवं महर्षि के मिशन को भजनोपदेश के द्वारा जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। सत्यार्थ प्रकाश न्यास के सभी पदाधिकारियों एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर विनम्र श्रद्धांजलि।

पण्डित दिनेश दत्त का देहावसान

प्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के सदस्य पण्डित दिनेश दत्त जी का दिनांक २४ अप्रैल २०२१ को हृदयाघात के कारण देहावसान हो गया। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करे एवं परिवारीजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति एवं सामर्थ्य प्रदान करें।

धर्मनिष्ठ आचार्य रामपाल विद्याभास्कर जी का निधन

बड़े ही दुःख का विषय है राजस्थान के वैदिक प्रवक्ता, सज्जन, निर्मल, धर्मनिष्ठ आचार्य रामपाल विद्याभास्कर जी का जयपुर अस्पताल में देहावसान हो गया। आर्यजगत् के लिए ऐसे विद्वान् को खोना बड़ा ही दुख का विषय है इनकी कमी कभी पूरी नही हो सकती। परमात्मा इनके परिवार को यह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करे व इस पुण्याई आत्मा को सद्गति प्रदान करे ऐसी कामना न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यगण परमपिता परमात्मा से करते हैं।

– श्री विजयसिंह भाटी प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा व महर्षि दयानन्द स्मृति भवन

राजा भोज और कवि माघ की आँखे खोलने वाली वृद्धा

कथा सरित

राजा भोज और उनका कवि माघ अपनी विद्वत्ता के लिये जगत् प्रसिद्ध थे, किन्तु एक वृद्धा माता ने अपनी सूझ-बूझ के बल पर राजा भोज और कवि माघ की आँखे खोल कर उन्हें निरूत्तर कर जीवन के अनेक अनमोल रहस्य प्रदान किये।

एक बार राजा भोज अपने साथ कवि माघ को लेकर आखेट के लिये वन में गये। शिकार खेलते-खेलते वह रास्ता भूल गये। बहुत देर तक वन में भटकते हुए उन्हें कुछ दूरी पर कुछ धुंधला सा प्रकाश दिखाई पड़ा। दोनों उसी तरफ चल दिए। उसके निकट पहुँचने पर उन्होंने एक बुढ़िया को अपने झौंपड़े के बाहर बैठे हुए देखा। दोनों ने बुढ़िया को प्रणाम किया राजा ने पूछा- 'माताजी यह रास्ता कहाँ जाता है? वह प्रश्न सुनकर बुढ़िया को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा यह रास्ता कहीं नहीं जाता। अनेक वर्षों से मैं इस रास्ते को यहीं पर देखती हूँ। केवल वे जाते हैं जो इस पर चलते हैं। पर तुम यह तो बताओं कि तुम दोनें कौन हो?'

भोज- भद्रे! हम दोनों यात्री (राहगीर) हैं और रास्ता भूल गये हैं। बुढ़िया ने हँसते हुए कहा- तुम झूठ बोलते हो। इस पृथ्वी पर केवल दो ही राहगीर हैं एक सूर्य और दूसरा चन्द्रमा। सच-सच बताओ तुम कौन हो?

बुढ़िया की यह बात सुनकर भोज आश्चर्य चकित रह गये। उसका कथन बहुत गूढ़ था। राजा की मुसीबत को अनुभव करते हुये कवि माघ उनकी सहायतार्थ आगे बढ़े और बोले हम अतिथि हैं। आप हमें अपना अतिथि समझकर रास्ता बता देने का कष्ट करें।

बुढ़िया बोली मैं तुम्हें अतिथि कैसे मान लू? अतिथि तो दो ही होते हैं एक यौवन और दूसरा धन। जो पता नहीं कब चल दे।

बुढ़िया ने जो कुछ कहा था ठीक था परन्तु कवि माघ चक्कर में पड़ गये। तब राजा भोज ने सम्भल कर कहा- 'माँ हम राजा हैं अब आप हमें बता दो कि यह रास्ता कहाँ जाता है?'

बुढ़िया फिर मुस्कराकर बोली- 'राजा भी दो ही हैं एक राजा इन्द्र और दूसरा यम जो किसी को नहीं छोड़ता। सब उनके बन्धन में हैं। संसार की बड़ी से बड़ी शक्ति मृत्यु का लोहा मानती है।'

राजा भोज ने पुनः स्पष्ट करते हुये कहा- 'हम वैसे राज नहीं है हम तो शक्तिशाली राजा हैं।'

बुढ़िया बोली ठीक है तुम शक्तिशाली राजा कैसे? क्योंकि संसार में शक्तिशाली तो दो ही हैं हथिनी और नारी। नारी (माता) को इसलिए तो भूमि से भारी कहा गया है।

अब राजा भोज परास्त से दिखाई दिये। बुढ़िया ने अपने कौशल गूढ़ रहस्यों को रखते हुए राजा को चुप कर दिया। तब फिर कवि माघ आगे बढ़े और बोले भद्रे! हम साधु हैं कृपा करके हमें रास्ता बताओं।

बुढ़िया बोली साधु भी दो ही हैं संतोष और धैर्य। बताओं तुम दोनों में से कौन हो?

वार्तालाप अधिकाधिक गूढ़ होता जा रहा था। बुढ़िया के उत्तर संक्षिप्त तथा रहस्यपूर्ण थे। न तो राजा भोज और न कवि माघ ही आगे बातचीत निरन्तर रखने की स्थिति में थे। अतः उन्होंने कहा है दयालु देवी! हम हार मान गये। यह सुनकर बुढ़िया जोर से हँस पड़ी और कहा संसार में दो ही व्यक्ति हारे होते हैं। एक ऋणी और दूसरा बेटी का बाप।

दोनों ने चुप रहना ही बुद्धि संगत समझा और आगे बढ़ गये।

- साभार- वप्पा रावल

स्वास्थ्य

स्वस्थ रहने के लिए लें १० संकल्प

१. खुद को स्वस्थ रखने के लिए हम बहुत कुछ करना चाहते हैं, लेकिन कर नहीं पाते। इस साल हम अपनी सेहत के लिए १० प्रण क्यों न लें, जिसका पालन पूरी ईमानदारी से करें।

तनाव भगायें

करियर और परिवार की जिम्मेदारियाँ, काम का बोझ, वक्त की कमी, रिश्तों के बीच बढ़ती दूरियाँ, अकेलापन और महत्वाकांक्षाएँ, आज इन स्थितियों का सामना अधिकतर लोग कर रहे हैं। इससे उनके जीवन में तनाव का स्तर काफी बढ़ गया है। इसका नकारात्मक प्रभाव उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य तथा जीवन की गुणवत्ता पर पड़ रहा है। तनाव के कारण शरीर में कई हार्मोनों का स्तर बढ़ जाता है, जिनमें एड्रीनलीन और कार्टिसोल प्रमुख हैं। इनकी वजह से दिल का तेजी से धड़कना, पाचन क्रिया का मन्द पड़ जाना, रक्त का प्रवाह प्रभावित होना, नर्वस सिस्टम की कार्यप्रणाली गड़बड़ा जाना और इम्यून सिस्टम कमजोर होने जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इसलिए जरूरी है कि कि छोटी-छोटी बातों पर तनाव नहीं पालेंगे।

जानलेवा मोटापे से बचें

मोटापे का अर्थ है शरीर में आवश्यकता से अधिक चर्बी बढ़ने से शरीर का बेडौल हो जाना। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मोटापे को स्वास्थ्य के लिए सर्वाधिक १० खतरों में शामिल किया है। आंकड़ों के अनुसार १० प्रतिशत आबादी मोटापे की शिकार है।

मोटापा अपने आप में कोई रोग नहीं, लेकिन यह कई रोगों को न्योता देने का कारण अवश्य है। इनमें प्रमुख हैं डायबिटीज, हाइपरटेंशन, हार्ट फेलियर, अत्यधिक पसीना आना, जोड़ों में दर्द और बांझपन। इससे बचे रहकर स्वस्थ व युवा नजर आएँगे।

नियमित दिनचर्या अपनाएँ

अपने सोने-जागने का एक नियमित चक्र बनाएँ। अगर हर दिन एक निश्चित समय पर सोएंगे और जागेंगे, आप अधिक ऊर्जावान और तरोताजा अनुभव करेंगे। एक्सरसाईज की आदत डालें। आज की तेज रफ्तार जिन्दगी से तालमेल बैठाने के लिए स्वस्थ और ऊर्जा से भरपूर होना जरूरी है। इसके लिए एक्सरसाईज से बेहतर क्या हो सकता है। इससे न सिर्फ शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने में सहायता मिलती है, बल्कि मानसिक शान्ति भी प्राप्त होती है। 'लैनसेट' में प्रकाशित एक खबर के अनुसार हर दिन केवल १५ मिनट की एक्सरसाईज भी आपके जीवनकाल को ३ साल बढ़ा सकती है।

भोजन रखे निरोग

एक पुरानी कहावत है कि भोजन को ही दवा बना लें। अगर आप नियमित रूप से संतुलित और पोषक भोजन का सेवन करेंगे तो न केवल बीमारियों से बचेंगे, बल्कि स्वस्थ और ऊर्जावान भी बने रहेंगे। अपने भोजन में फल, सब्जियों, साबुत अनाज और तरल पदार्थों को उचित मात्र में शामिल करें। दिन में तीन बार मेगा मील खाने की बजाए छह बार मिनी मील खाएँ।

नींद कितनी जरूरी

विशेषज्ञ कहते हैं कि हमें कम से कम छह से ८ घंटे की नींद लेनी चाहिए। हर व्यक्ति के शरीर में नींद की बायोलाजिकल क्लाक होती है। जब यह क्लाक असन्तुलित होती है तो परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

रिश्तों को दें नई ताजगी

अच्छे खुशहाल रिश्ते हमारी सेहत के लिए बहुत जरूरी हैं। हाल ही में किए एक शोध में यह बात सामने आई है कि जिन लोगों का सामाजिक जीवन जितना सक्रिय होता है, वो उतने ही खुशहाल होते हैं। सामाजिक रूप से सक्रिय रहना अवसाद और तनाव से दूर रखता है। अपने बच्चों के साथ बैठें और उनसे दिन के बारे में चर्चा करें। परिवार के साथ डिनर या पिकनिक पर जाएँ।

ध्यान लगाएँ

ध्यान को मस्तिष्क की खुराक कहा जाता है। ध्यान एक साधारण, लेकिन शक्तिशाली तकनीक है, जो आपके मस्तिष्क को शान्त और स्थिर रखती है। आपको सिर्फ यह करना है कि आप अपनी आँखें बन्द करके बैठ जाएँ और गहरा आराम अनुभव करें। शुरुआत में थोड़ी दिक्कत होगी, लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति से आप मन को काबू में कर लेंगे। कई अध्ययनों में यह बात भी सामने आई है कि ध्यान एलर्जी, उत्तेजना, अस्थमा, कैंसर, थकान, हृदय सम्बन्धी बीमारियों, हाई ब्लडप्रेशर, अनिद्रा में आराम मिलता है। हमारी कई बीमारियाँ मनोवैज्ञानिक होती हैं। इनसे भी बचाव करने में ध्यान हमारी काफी सहायता करता है। २००८ में हुए शोध में यह बात सामने आई है कि ध्यान तंत्रिका तंत्र को मजबूत करता है।

साभार- हिन्दुस्तान लाईव टाइम

समाचार

युवा टोली ने मनाई होली

आर्य समाज नेमदारगंज (नवादा) की युवा टोली ने होली के पावन पर्व पर श्री संजय सत्यार्थी के निर्देशन में पूरे गाँव में घूमते हुए होली मिलन समारोह एवं वैदिक झुमटा में कुरीतियों कुप्रथाओं को दूर करने का सन्देश गीतों के माध्यम से ढोल मजीरा झाल बजाते हुए जुलूस निकाला। कवियों के गीतों, साखियों, दोहों को उपस्थित किया गया। सिर जावे तो जावे मेरा वैदिक धर्म ना जावे से पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, भगत सिंह, वीर हकीकत राय आदि बलिदानियों को स्मरण किया गया। श्री रणजीत कुमार आर्य-मंत्री, श्री लखीनारायण आर्य-कोषाध्यक्ष, प्रधान श्री अश्विनी कुमार, श्री उदय कुमार, श्री राहुल कुमार, श्री विकास कुमार, श्री राकेश कुमार, श्री संजय कुमार मोक्षानन्द, श्री मनोज कुमार, श्री वेदप्रकाश आर्य, हर्षवर्धन, श्री गौतम कुमार, श्री सागर कुमार आदि ने तत्परता से योगदान दिया। श्री फुलचन्द मांझी एवं श्री उपेन्द्र जी ने नाल पर संगति की।

– सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत', आर्य समाज नेमदारगंज

महर्षि दयानन्द जयन्ती धूम धाम से मनाई

आर्य समाज मन्दिर, महर्षि पाणिनि नगर-जोधपुर में महर्षि दयानन्द सरस्वती की १९७वें जयन्ती महोत्सव बड़े धूम धाम से मनाया गया। प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने बताया की जन्मदिवस की पूर्व संध्या पर भजन संध्या का आयोजन किया गया। जिसमें जयपुर से पधारी आर्य भजनोपदेशिका आचार्य श्रुति व विद्वान् आचार्य आर्य नरेश जी ने अपने प्रवचनों से लाभान्वित किया, साथ ही नेहा, खुशबू, श्रीमति चन्द्रकान्ता जसमतिया, गुलाबचन्द आर्य, श्रीमति अनिता भाटी, मुकुल आर्य ने भी भजनों की प्रस्तुति प्रदान की। विद्वानों ने महर्षि दयानन्द के जीवनी पर बहुत सुन्दर प्रकाश डाला। इस शुभ अवसर पर ३० वरिष्ठ आर्यजनों को अभिन्दन पत्र प्रदान किया, साथ में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस होने पर ३५ वरिष्ठ आर्य महिलाओं को स्मृति चिह्न विद्वानों व मुख्य अतिथि श्रीमति चन्द्रकान्ता भाटी द्वारा प्रदान कर उनका स्वागत किया गया। १५० महर्षि दयानन्द जीवनी की पुस्तक निःशुल्क प्रदान की गई। आर्य समाज को सुन्दर लाइटों से सजाया गया। दो दिन ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई। इस अवसर पर सेठ ज्ञानसिंह, सोहनसिंह, नरेन्द्र आर्य, शिवराम आर्य, आर्य गजेन्द्र सांखला, महेश कुमार, रमेश मेहरा, करणसिंह, धीरेन्द्र, चेतनप्रकाश, रमेशचन्द्र, माधोसिंह, मदनलाल तंवर, किशनलाल, जयसिंह गहलोत, श्रीमती सन्तोष आर्या, सरोज भाटी, पुष्पलता, ललिता सांखला, सुशीला, अदिति आर्या, प्रकाश, मनोहर, देवीलाल, अशोक, भगवान रविश, रवीन्द्र व जोधपुर के सभी आर्य समाजों के सदस्यगणों का सहयोग रहा। मंत्री नरेन्द्र आर्य ने सभी अतिथिओं का धन्यवाद ज्ञापित किया।

– कैलाश चन्द्र आर्य, प्रधान

महर्षि दयानन्द स्मारक न्यास भिनाय कोठी अजमेर के निर्वाचन सम्पन्न

महर्षि दयानन्द स्मारक न्यास अजमेर के निर्वाचनों में सर्वसम्मति से पुनः न्यास का सम्पूर्ण दायित्व पूर्व विधायक एवं आर्य श्रेष्ठ श्रीगोपाल बाहेती जी के कंधों पर डालते हुए उन्हें प्रधान पद पर अभिषिक्त किया गया है। तो अजमेर के ही पूर्व उपमहापौर श्री सोमरत्न जी आर्य को मंत्री निर्वाचित किया गया है। श्री सुभाष नुवाल जी को न्यास का कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

जैसा कि सभी जानते हैं महर्षि दयानन्द ने इसी भिनाय कोठी में ३० अक्टूबर १८८३ के दिन अपनी जीवन लीला को समाप्त करते हुए एक ऐसा अद्भुत दृश्य परम ईश्वर भक्त होने के नाते उपस्थित किया था, जिस पर विचार करके पंडित गुरुदत्त जैसे अत्यधिक मेधावी परन्तु तत्समय में ईश्वर को न मानने वाले विद्वान् भी निमिष मात्र में आस्तिक बन गए थे। यह भिनाय कोठी महर्षि जी की स्मृति की बहुमूल्य निशानी है। आशा ही नहीं विश्वास है कि नवीन पदाधिकारी इसके यश में अवश्य ही आशातीत वृद्धि कर सकेंगे। हम श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के सभी न्यासीगण एवं सत्यार्थ सौरभ पत्रिका के सभी सदस्यगण इन सभी पदाधिकारियों को बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं।

– अशोक आर्य

हार्दिक श्रद्धाञ्जली

आर्य सिद्धान्तों के प्रति समर्पित श्रीमती मीना आर्या (धर्मपत्नी- श्री आनन्द कुमार आर्य, का. प्रधान- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज टाण्डा के प्रधान, बाबू मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज के प्रबन्धक और डी. ए. वी. एकेडमी इण्टर कॉलेज टाण्डा के संस्थापक प्रबन्धक) का दिनांक २८ अप्रैल २०२१ को प्रातः लखनऊ में महाप्रयाण हो गया। उनकी अन्त्येष्टि वैदिक रीत्यानुसार सरयूनदी के तट पर टाण्डा, अम्बेडकर नगर में सम्पन्न हुई। मुखाग्नि उनके ज्येष्ठ पुत्र- मनीष आर्य ने दी। ईश्वर से दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा शोकाकुल परिवारीजन को धैर्य और सम्बल प्रदान हेतु न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार ईश्वर से प्रार्थना करता है। उनके वैदिक मार्ग का अनुसरण ही सच्ची श्रद्धांजलि है।। श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए सादर स्मरण एवं नमन।

– अशोक आर्य, सम्पादक-सत्यार्थ सौरभ

पद्मिणी आर्ष कन्या गुरुकुल (चित्तौड़गढ़) की प्रचार्या, सिद्धहस्त लेखिका, वैदिक उपदेशिका, आर्य मन्तव्यों को अपनी सुमधुर वाणी से जन-जन तक प्रचारित-प्रसारित करने वाली, आर्य सिद्धान्तों के प्रति समर्पित विदुषी सुश्री सीमा श्रीमाली जी का दिनांक २६ अप्रैल २०२१ को आकस्मिक देहावसान हो गया। उनके वैदिक मार्ग का अनुसरण ही सच्ची श्रद्धांजलि है। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए परमात्मा के श्रीचरणों में प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करे।

ध्यातव्य– सत्यार्थ प्रकाश पहेली 2 एवं 3 के उत्तर एक साथ अगले अंक में प्रकाशित किए जायेंगे। असुविधा के लिए खेद है।

–व्यवस्थापक-सत्यार्थ सौरभ

हाल ही में कर्नाटक के मैसूर की एक लाइब्रेरी में आग लगने की घटना सामने आई थी। इसमें ३००० भगवद्गीता समेत ११ हजार पुस्तकें जल कर राख हो गई थी। मामले में मैसूर पुलिस ने सैयद नासिर नाम के शख्स को गिरफ्तार किया है। बता दें कि यह सार्वजनिक पुस्तकालय सैयद इसाक नाम के शख्स का था। सैयद इसाक दिहाड़ी मजदूर हैं। इसाक ने इस सार्वजनिक पुस्तकालय को अमार मस्जिद के पास राजीव नगर में एक निगम पार्क के अंदर एक शेड जैसी संरचना में स्थापित किया था। हर दिन, १००-१५० से अधिक लोग उनके पुस्तकालय में आते थे। इसाक कन्नड़, अंग्रेजी, उर्दू और तमिल सहित १७ से अधिक समाचार पत्रों की खरीद करते थे। वह लाइब्रेरी के रख-रखाव और अखबारों की खरीद पर लगभग ६,००० रुपए खर्च करते थे।

द हिंदू की रिपोर्ट के मुताबिक मैसूर सिटी पुलिस ने लापरवाही से जलती माचिस की तीली फेंकने के आरोप में उसे गिरफ्तार किया है। इसी वजह से आग लगी थी। पुलिस का कहना है कि ३५ वर्षीय आरोपित ने बीड़ी सुलगाने के लिए माचिस की तीली जलाई और फिर बिना इधर-उधर देखे उसे लापरवाही से फेंक दिया।

शहर के पुलिस आयुक्त चंद्रगुप्त ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि आरोपित सैयद नासिर देर रात नशे की हालत में घर लौटा। उसका अपनी माँ और बहनों से झगड़ा हुआ। इसके बाद वह घर से बाहर निकल गया। बाहर निकल कर उसने बीड़ी और माचिस की तीली जलाई और खुले में एक मरम्मत की दुकान के बाहर रखे फर्नीचर और कुशन पर माचिस की तीली फेंक दी।

घटनास्थल से उसके निकलने के कुछ ही मिनटों बाद आग लग गई। दो स्थानीय लोगों ने इस घटना को देखा और उन्होंने आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन वे सफल नहीं हो सके। आग की लपटें बढ़ती गई और जल्द ही पूरी लाइब्रेरी राख के ढेर में तब्दील हो गई।

पुलिस ने डिटेल्स पता करने के लिए सीसीटीवी में कैद तस्वीरों का सहारा लिया। यह पता लगाने के लिए आगे की जाँच चल रही है कि घटना जान-बूझकर की गई थी या अनजाने में।

शुक्रवार (९, अप्रैल) को लोकायुक्त ने केरल के अल्पसंख्यक कल्याण एवं उच्च शिक्षा मंत्री केटी जलील को शक्ति के दुरुपयोग, पक्षपात, नेपोटिज्म और पद की शपथ के उल्लंघन का दोषी पाया है। लोकायुक्त ने यह भी आदेश दिया है कि जलील को मंत्री परिषद् का सदस्य नहीं बने रहना चाहिए। वीके मोहम्मद के द्वारा जलील के विरुद्ध की गई शिकायत में यह आरोप लगाया गया है कि जलील ने केरल के राज्य अल्पसंख्यक विकास वित्त कॉर्पोरेशन लिमिटेड में जनरल मैनेजर के रूप में अपने रिश्तेदार केटी अदीब को नियुक्त करने के लिए अपने पद का दुरुपयोग किया है।

लोकायुक्त के अनुसार जलील द्वारा अपने पद का उपयोग करते हुए कॉर्पोरेशन में जनरल मैनेजर के पद की योग्यताओं में परिवर्तन किया गया। जलील के रिश्तेदार को जनरल मैनेजर के पद के योग्य बनाने के लिए योग्यताओं में 'बीटेक के साथ पीजीडीबीए' को भी एक योग्यता के रूप में जोड़ दिया गया जिससे जलील के रिश्तेदार केटी अदीब को लाभ पहुँचाया जा सके।

लोकायुक्त जस्टिस सिरियक जोसेफ और उप लोकायुक्त हारुल उल राशिद ने कहा कि 'पद की शपथ के उल्लंघन, नेपोटिज्म, पक्षपात और शक्ति के दुरुपयोग' के आरोप में जलील के विरुद्ध 'केरल लोकायुक्त अधिनियम १९५९' की धारा १४ के तहत उचित कार्रवाई करने के लिए केरल के मुख्यमंत्री को रिपोर्ट सौंप दी गई है।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने की वेद भूषण आर्य के मॉडल की प्रशंसा
दिल्ली में आयोजित समारोह में प्रदर्शनी मे रखे जाएँगे मॉडल

कोटा, ११ अप्रैल। नई दिल्ली से कोटा आए आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामन्त्री विनय आर्य एवं गुरुकुल कन्या आश्रम, भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामंत्री जोगेन्द्र खट्टर ने कोटा के आर्टिस्ट वेदभूषण आर्य (सुपुत्र स्व. डॉ. रामकृष्ण आर्य) द्वारा बनाए गए मॉडल की प्रशंसा की है। साथ ही उन्होंने बताया कि दिल्ली में आयोजित समारोह में आर्टिस्ट वेद भूषण आर्य द्वारा बनाए गए मॉडल की प्रदर्शनी लगवाएँगे। उन्होंने बताया कि आर्य ने मॉडल बनाकर अपनी कला को निखारा है। उन्होंने वेद भूषण आर्य को आशीर्वाद दिया। वेदभूषन एक सिद्धहस्त चित्रकार भी हैं, उन्होंने पंडित रामचन्द्र देहलवी जी का एक चित्र सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर की आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा को भेंट किया है।

– अरविन्द पाण्डे, महामंत्री

नव संवत्सर व आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज अंजली विहार के सभागार में नवसंवत्सर व आर्यसमाज स्थापना दिवस की विशेष आहुतियाँ देकर, यज्ञ करके बड़े ही हर्षोल्लास के साथ यह पर्व मनाया गया।

वैदिक विद्वान् वानप्रस्थी राजेन्द्र मुनि ने आज के दिन के महत्व पर प्रकाश डालाते हुए बताया कि आज ही के दिन क्रान्तिकारी युगपुरुष योगीराज महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी। जिसने समाज व राष्ट्र की ही नहीं सम्पूर्ण विश्व से पाखण्ड को मिटाने का कार्य किया। समस्त कुरीतियों को समूल उखाड़ फेंका। 'बच्ची अध्वरा आर्या ने आर्य समाज है ये आर्य समाज है' गीत प्रस्तुत कर श्रोताओं का मन मोह लिया। अन्त में प्रधाना श्रीमती ऊषा आर्या ने जयघोष व शान्ति पाठ करवाया।

– राजेन्द्र मुनि, कोटा

यज्ञ में अत्यधिक श्रद्धा रखने वाली, आर्य समाज एवं आर्य सिद्धान्तों में पूर्ण विश्वास रखने वाली, कम पढ़ी लिखी परन्तु आर्ष साहित्य के स्वाध्याय एवं उसके प्रचार प्रसार हेतु पूर्ण रूप से समर्पित, स्वयं वैदिक भजन गाने एवं बड़े ही आनन्द के साथ सुनने में रुचि रखने वाली, आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर एवं श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर की अत्यन्त सहयोगी श्रीमती ग्यारसी देवी का दिनांक २६ अप्रैल २०२१ को निधन हो गया। ऐसी ऋषि भक्त श्रद्धालु को नमन करते हुए न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार तथा उदयपुर के समस्त आर्यजन परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करे।

– अमृतलाल तापड़िया, संयुक्त मंत्री-न्यास

ईश्वरोपासना

**प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत्।
प्र शर्द्धाय प्र यज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे।।**
– सामवेद पू.५/२/८/६

वेदज्ञानी मनुष्य बड़ाई के लिए, यज्ञ के लिये, बल के लिये, अन्नादि (यज्ञ के साधनों) के लिये, इनके सुखपूर्वक उपयोग के लिये, स्फूर्ति के लिये, कल्याण-सुख संगति के लिये, मानस बल के लिए, उच्च बुद्धियाँ प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करे।

हम प्रभु से प्रतिदिन प्रार्थना करें कि हे सर्वनियन्ता ईश्वर! जो मेरा मन रस्सी से घोड़ों के समान अथवा घोड़ों के नियन्ता सारथी के तुल्य मनुष्यों को अत्यन्त इधर-उधर डुलाता है, जो हृदय में प्रतिष्ठित, गतिमान और अत्यन्त वेग वाला है वह (मेरा मन) सब इन्द्रियों को अधर्माचरण से रोक के धर्मपथ में सदा चलाया करे। ऐसी कृपा मुझ पर कीजिये।

१. प्रभु कृपा कर हमें श्रेष्ठ मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान प्राप्त कराऐं तथा कुटिल पापाचरण रूप मार्ग से हमें पृथक् करें।
२. हम अहिंसक हो हिंसा से दूर रह ऐसा कोई कार्य न करें जिसके लिए प्रभु के दण्डनीय हों।
३. प्रभु की कृपा से हम असत् मार्ग से पृथक् हो सन्मार्ग में प्रवृत्त हों। अविद्यान्धकार से दूर हो विद्यारूप सूर्य को प्राप्त करें और मृत्यु रोग से पृथक् हो मोक्ष के आनन्दरूप अमृत को प्राप्त करें।

उपरोक्त प्रकार की जब हमारी प्रार्थना होगी तथा तदनुरूप ही हम मनसा वाचा कर्मणा आचरण करेंगे तो इहलोक में तो सुख-समृद्धि प्राप्त करेंगे ही, परलोक-सुख के अधिकारी भी होंगे तथा सारा प्राणी समाज भी सुखी होगा। प्रभु ऐसी प्रार्थना अवश्य स्वीकार करते हैं।

उपासना– हमने पूर्व में कहा था कि ईश्वर भक्ति का जो अनन्य लाभ है वह है आनन्दस्वरूप परमात्मा के सान्निध्य में आनन्द को प्राप्त करना। यह आनन्द वर्णनातीत है। कवि ने सत्य ही लिखा है–

'तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया,
वो वाणी से जायेगा क्योंकर बताया।
कि गूंगे की रसना के सदृश अमीचन्द,
कैसे बताएँ कि क्या स्वाद आया?

यह आनन्द ईश्वर की उपासना से ही सम्भव है। उपासना का अर्थ है– समीप स्थित होना। जिस प्रकार हम अग्नि के समीप बैठने पर उष्णता तथा जल के समीप शीतलता का अनुभव करते हैं उसी प्रकार आनन्दस्वरूप परमात्मा की समीपता (उपासना) में आनन्द की अनुभूति करते हैं। उपासनाकाल में उपासक अपने मन को परमेश्वर में स्थित रक्खे। उस अवस्था में उस पर बहुत कुछ परमात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव का प्रभाव हो जाता है। इसका आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है और परमेश्वर के सान्निध्य में नित्य प्रति ज्ञान बढ़ाकर मुक्ति तक पहुँच जाता है।

उपासना क्यों करें ?

ऋ. ४/४२/८- दु:ख पर विजय प्राप्त करें।
ऋ. २/३८/१०- ईश्वर के प्रिय बनने के लिये।
ऋ. ७/३८/१- श्रेष्ठ लक्ष्मी को प्राप्त होते हैं।
ऋ. १/३३/१- शरीर और आत्मा का बल बढ़ाने हेतु।
ऋ. ६/१७/८- परम् ऐश्वर्य को पाते हैं।
ऋ. ७/३६/२- मोक्ष प्राप्ति हेतु।
यजु. २२/१३- धर्म अर्थ काम की सिद्धि हेतु।

'उपासना का राजमार्ग केवल और केवल अष्टांगयोग है। महर्षि लिखते हैं- 'अष्टांग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने और उसको सर्वव्यापी सर्वान्तयामिरूप से प्रत्यक्ष करने के लिये जो-जो काम करना होता है, वह-वह सब करना चाहिये। (सत्यार्थ प्रकाश-सप्तम समुल्लास)

स्पष्ट है कि परमात्मा का प्रत्यक्ष केवल और केवल अष्टांगयोग का अवलम्बन करके हो सकता है। उपासना का यही मार्ग है।

उपासना की तैयारी– लोक में भी हम किसी से मिलना चाहते हैं तो स्वच्छता, पहिनाव उढ़ाव की उत्तमता का ध्यान रखते हैं। किसी अशुद्ध पात्र में अगर शुद्ध वस्तु रखी जावे तो वह भी अशुद्ध हो जाती है। अतएव उपासक को स्वयं का मार्जन करने की अति आवश्यकता है। यह शौच बाह्य तथा आभ्यन्तर दोनों प्रकार का होना चाहिये। अतएव उपासक को सर्वप्रथम यम और नियमों का अभ्यास कर स्वयं को विकारों से रहित बनाना होगा। आज योग के नाम पर सैकड़ों प्रकल्प चल रहे हैं पर वे यम नियम की कठिन साधना पर जोर नहीं देते, पर स्मरण रखे यम-नियम की साधना के बिना अभिलषित फल कदापि प्राप्त नहीं हो सकता।

– अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

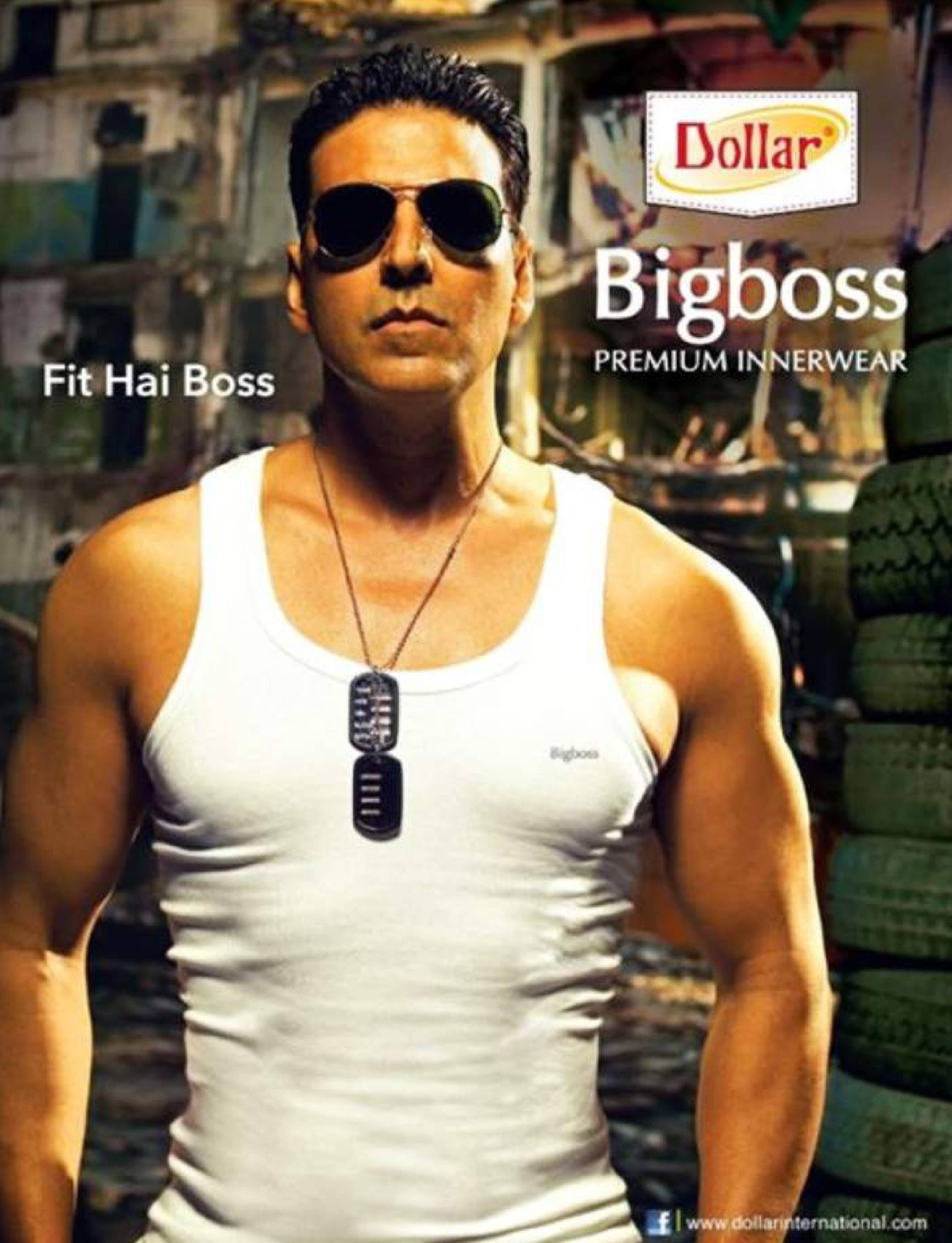

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 May-2021 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

जब स्वदेश ही में स्वदेशी लोग व्यवहार करते और परदेशी स्वदेश में व्यवहार वा राज्य करैं तो विना दारिद्र्य और दुःख के दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता।

- सत्यार्थ प्रकाश, दशम समुल्लास पृष्ठ २६३

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर